The House reassembled after lunch at fortyfive minutes past two of the clock, MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair.*

STATEMENT BY MINISTER RE. INCIDENTS AT VILLAGES SAJNI AND NONARI IN AZAMGARH, UTTAR PRADESH

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS AND IN THE DEPARTMENT OF PERSONNEL (SHRI RAM NIWAS MIRDHA): Sir, mention has been made in this House regarding the incidents which occurred in villages Nonari and Sajni of District Azamgarh, Uttar Pradesh. According to the information received from the State Government, on November 14 and 15, a serious incident took place between two rival communities in village Nonari during which two persons were killed and some houses of a particular community were alleged to have been burnt and looted. Eleven persons received injuries. The State Government are considering the question of giving financial relief to those who may be in need. Six cases have been registered in this connection and are being investigated by the C.I.D. Fourteen persons were arrested.

Another incident involving members of two different communities, occurred in village Sajni, on December 12, in which about 43 houses were partially burnt and some persons sustained injuries. Cases of arson, riot and loot have been registered and 24 persons were arrested—17 for substantive offences and 7 under the preventive provisions. The Station House Officer concerned has been placed under suspension. Senior officers have visited the scene of occurrence and the situation is reported to be under control.

Government of Uttar Pradesh have instituted under the Commissions of Inquiry Act, an inquiry by a retired Judge of the High Court, into the incidents which occurred in villages Nonari and Sajni.

SHRI SHYAM LAL YADAV (Uttar Pradesh): There is one point. The hon'ble Minister said that the S.H.O. has been suspended. I think the S.H.O. of only one police station has been suspended and not of the other police station. Secondly, the S.P. and the D.M. also should be suspended because the judicial enquiry cannot proceed unless they are suspended. I think the Government should suspend them also so that an impartial enquiry may be held.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Yadav, you will now speak on the resolution.

RESOLUTION RE. ACTIVITIES OF FOREIGN INTELLIGENCE AGENCIES IN INDIA

श्री श्याम लाल यादव (उत्तर प्रदेश) : मान्यवर, मैं आपका अनुगृहीत हूं कि आपने मुझे श्री गुप्त जी के प्रस्ताव पर बोलने का मौका दिया है। यह प्रस्ताव अत्यन्त सामयिक है और जो चर्चा देश में चल रही है उसकी तरफ इस सदन और सरकार का ध्यान आकृष्ट करने वाला है। मान्यवर, वास्तव में, यह जो गुप्त तरीके से एक राष्ट्र सरकार द्वारा दूसरे देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप की कोशिश की जाती है उसके बारे में जानकारी बहुत पहले से ही थी, लेकिन चन्द महीनों से सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी के जो अध्यक्ष थे, उन्होंने इस तरफ देश का ध्यान दिलाया और प्रधान मंत्री जी ने भी इस सम्बन्ध में ब्यान दिया। इसके बाद फिर इधर-उधर से बहुत से लोगों ने इस सम्बन्ध में बातें कही।

मान्यवर, इन एजेन्सियों द्वारा किस प्रकार से कार्य किया जाता है और इनके कार्यकलाप किस तरीके के होते है इस देश में या बाहर के किसी देश में, इस विषय में, मैं ज्यादा नहीं कहना चाहता हूं। लेकिन इन लोगों की कुछ विशेषताएं होती है कि किस प्रकार से तथा किन तरीकों से ये काम करते है और किन तरीको से किसी देश की सरकार को पलट देते हैं, किसी राज नेता को पलट देते हैं और किस प्रकार से नाना प्रकार के कृत्य करते हैं।

चाहे वह अमरीका की एजेन्सी हो अथवा रूस की एजेन्सी हो। यह उचित ही है कि हमारे देश की सरकार इस बात को मानती है कि ऐसी एजेन्सी हमारे देश में सक्रिय हैं। तो अभी जब उनका प्रभाव नहीं बढ़ा है, उन्होंने ज्यादा ताकत नहीं पकड़ी है उसके पहले ही इन तमाम बातों की जांच हो जाये और वह सारे देश के सामने आ जाये तो उनका पर्दाफाश हो जाये और देश के लोग उसके प्रति सतर्क हो जाये। मान्यवर, अमरीका की सी०आई०ए० के बारे में उसके जो रिटायर्ड आफिसर हैं उन्होंने और दूसरे तमाम लोगों ने किताबें लिखी हैं जिनका सदन के कई सदस्यों ने

रेफरेंस दिया है । अगर ये नही होतीं तो कैसे पता लगता कि किस तरह से सी०आई०ए० काम करती है । उसी प्रकार से अगर देश मे जाच हो जाये तो मैं समझता हूं कि लोगों को जानकारी हो जायेगी कि किस प्रकार से ये संस्थायें, एजेन्सीज हमारे देश में काम कर रही है, चाहे वह सी०आई० ए० हो या के० जी०बी० हो। इसकी जानकारी होना बहुत जरूरी है क्योंकि उससे पता लगेगा कि किस प्रकार उनका काम होता है, कहां-कहां उनकी पहुंच है, क्या यह अपने लोगों से काम कराते है इन बातों की जानकारी चन्द लोगों को भले ही हो आम तौर से जनता को नही है । मान्यवर आज दुर्भाग्य से या सौभाग्य से देश में कोई समस्या खड़ी हो तो उसके लिए फट से सी०आई०ए० का नाम ले लिया जाता है। देश की जो आर्थिक स्थिति है, जो संकट की स्थिति है, उत्पादन नही हो रहा है, कृषि का उत्पादन घट रहा है, सूखा पड़ा है, चाहे मजदूर वर्ग हो, किसान वर्ग हो अथवा छात्रों का आन्दोलन हो या कोई और बात हो--मैं अदब के साथ अर्ज करता हूं--यह फैशन सा हो गया है, अपनी जिम्मेदारी को न निभाना, उसकी चर्चा न करना, उसका विवेचन न करना और कह देना कि सी०आई०ए० ने ऐसा किया । बनारस हिन्दू यूनी-वर्सिटी में जो दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं हुई उस सिलसिले में मैंने देखा कि यह कहा गया कि वहां छात्रों में सी०आई०ए० की एक्टिविटीज हो रही है और सत्तारूढ़ दल के दो सदस्यों ने अखबार में बयान दिया। वहां पर एक घटना 8 दिसम्बर को हुई, यूनी-वर्सिटी के बाहर स्टूडेन्ट्स की एक्शन कमेटी के मेम्बर उदय प्रताप सिह का मर्डर हुआ । तीन आदमियों के खिलाफ बाजाब्ते रिपोर्ट लिखाई गई है । उनमे दो, कहा जाता है सत्तारूढ़ दल के छात्र संगठन से सम्बन्धित है और एक दूसरे संगठन से सम्बन्धित है । उनके खिलाफ रिपोर्ट आई, लेकिन कोई कार्यवाही नही हो रही है, पुलिस कोई कार्यवाही नही कर रही है । इसके लिए भी कहा जाये कि यह सी०आई०ए० ने कर दिया, छात्रों के ऊपर इस तरह का आरोप लगना है कि सारा छात्र समुदाय सी०आई०ए० के प्रभाव में है या के० जी०बी० के प्रभाव मे है, अगर इन बातों की सफाई नही होगी तो यह इतना बड़ा लाछन है जो मैं समझता हूं इस देश के लिए और खासकर सरकार के लिए यह बड़े कलंक की बात होगी ।

इसी के साथ-साथ दूसरी तरफ अभी आजम-गढ़ की घटनाएं 14-15 नवम्बर को हुई । उस सिलसिले मे हमने देखा कि एक साहब कह रहे थे कि सारे उपद्रव आजमगढ़ में सी०आई०ए० करा रही है क्योंकि आजमगढ़ में एक सिलसिला घटनाओं का चला, अब तक चार जगह एक सी ही घटनाएं हुईं, कुछ लोगों में थोड़ा असंतोष हुआ और तुरन्त गांव में माइनारिटीज के जो मकानात थे उनको लूट लिया गया और उनको जला दिया गया । जो गवर्नमेंट का बयान छपा अखबार में उसमें भी यह कहा गया कि एक ही तरीका उन घटनाओं में अपनाया गया प्रेरणा पैदा करने के लिए और फिर उसके बाद एक ही तरह की कार्यवाही हुई । वहां पर दूसरी घटना हुई सजनी की । वह बडी दुर्भाग्यपूर्ण है । वहां एक लड़की के साथ छेड़छाड़ हुई और पूरा गांव ही जला दिया गया । यह ठीक है कि जो लोग अपराध करते है उसकी जांच की जाये और जो अपराधी पाए जायें उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाये जिससे अपराध न हों । समय पर कोई कार्यवाही न करना और जो अधिकारी दोषी हों उनके विरुद्ध कार्यवाही न करना और यह कह देना जिम्मेंदारी से बचने के लिए यह

[श्री श्याम लाल यादव]

सब योजनाबद्ध कार्यवाही हो रही है और इस मे सी० आई० ए० का हाथ है अथवा के० जी० बी० का हाथ है। यह तो बहुत सस्ता तरीका निकल आएगा। आज जो असतोष है, जो जनरोष है उसको प्रगट करने के लिए जब जनता आगे बढती है तो उस को पट से सी० आई० ए० का नाम देना, मै समझता हू कि उचित नही है और न ही जनता उस का यकीन करेगी। ऐसी ही घटना मुझे मालूम हुआ कि अहमदाबाद मे हुई। जब वहा एक बाई-एलेक्शन हो रहा था तो उस के दौरान काग्रेस के नेता यह भाषण देते रहे कि जो आप को तक्लीफ है, जो चीजो के दाम बढ रहे है, जो महगाई बढ रही है, जो चीनी के दाम बढते जा रहे है, जो कोयला नही मिल रहा है उस सब मे सी० आई० ए० का हाथ है। और इस प्रकार के ही भाषण वहा होते रहे, तो जनता ने कहा कि जब ऐसा है तो आप सी० आई० ए० के पास ही जाइये, और वहा की जनता ने दूसरे उम्मीदवार को जिता दिया। यही स्थिति सारे उत्तर भारत मे है। कही छात्रो का असतोष हो या मजदूरो की हडताल हो, हर किसी के लिये एक वही कारण बता दिया जाता है। मेरे पास फोटो है। यह लोहे की अल्मारी है जिस को तोडा गया, पक्के मकान है उन की छतो को तोडा गया, मकानो को जला दिया गया और उस सब की यह फोटो खीची गयी है, और इस सारे काड की जिम्मेदारी केवल सी० आई० ए० पर डाल देना, मै समझता हू कि किसी प्रकार भी उचित नही है। यह ठीक है कि इस के लिये आप ने जाच बिठाई है और उस को जाच करने वाले जज देखेगे। वह देखेगे कि कौन सी घटना है और वह किसने की है, लेकिन अगर इन तमाम घटनाओ मे सी० आई० ए० का हाथ है तो वह जुडिशियल इक्वायरी उस की जाच नही कर पायेगी जब तक कि आप स्पष्ट रूप से उस के लिए कोई अलग से आयोग न बनाये। और विदेशी रुपया तो हमारे देश मे मौजूद है। अमरीका का पी० एल० 480 रुपया है, रूस का भी यहा बहुत सा रुपया है। उस की किताबे यहा आती है, उस का और बहुत सा साहित्य यहा आता है, उस की मशीनरी यहा आती है, तो इस तरह उस का तमाम रुपया यहा है और बडी सरलता से वह उसे जहा चाहे खर्च करते है। वह उसे यहा की राजनीति मे, यहा के चुनाव मे, दैनिक कार्यों मे, सरकारो को पलटने मे और बनाने मे, विधायको को तोडने मे, खरीदने मे, इस तरह से तमाम चीजो मे उस रुपये का दुरुपयोग हो सकता है क्योकि उन के पास रुपया है और देश के लोगो को उस का पता नही चलेगा। तो जब तक इस बात की जाच सरकार नही कराती, मै समझता हू कि यह जिम्मेदारी सरकार के माथे पर जायेगी। ऐसा माना जायेगा कि वह स्वय इस बात के लिए तैयार नही है कि इस तमाम मामले को साफ किया जाये ताकि बात साफ हो जाए कि सी० आई० ए० का इस सब मे कितना प्रभाव है या के० जी० बी० का रुपया कौन लेता है। यह सारी बाते अगर देश के सामने आप को स्पष्ट करनी है तो मै समझता हू कि सरकार के सामने कोई दूसरा विकल्प नही है सिवाय इस के कि वह इस प्रस्ताव को मान ले। और एक उच्च-स्तरीय न्यायाधीश के द्वारा इस की जाच कराये और न्यायाधीश भी वह रखा जाये कि जो सर्विस जज हो। ऐसा जज नही होना चाहिए कि जो रिटायर हो चुका हो क्योकि रिटायर्ड जजो को भी प्रलोभन हो सकता है। तो जो सर्विस जज हो उस की आप नियुक्ति करे और मै समझता हू कि इस काम मे कोई रूकावट नही पडेगी और जो प्रश्न देश के सामने उपस्थित हुआ है और जिस के आरोप आये दिन गरीबो पर, मजदूरा पर

छात्रों पर और श्रमिक वर्ग पर लगाया जाता है उन की सफाई हो जायेगी कि आया वह इस मे शरीक है या नही है । उन पर जब अत्याचार होते है, उन मे जब असंतोष होता है, तो उस मे कितनी ही अन्य बातें आ जाती है । इस लिए मान्यवर, मै पुन: इस बात के लिए निवेदन करना चाहता हूं कि सरकार अपनी ही सफाई के लिए, और स्थिति स्पष्ट करने के लिए इस प्रस्ताव को मान ले वरना हम तो यह समझेंगे कि कही न कही से उस पर दबाव पड रहा है जिस की वजह से वह इस की जाच नही कराना चाहती, वरना क्या डर है आप को इस प्रस्ताव को मान लेने मे । इसलिए मै इस प्रस्ताव का समर्थन करता हू । धन्यवाद ।

श्री भोला पासवान शास्त्री (बिहार) : उपसभापति जी, आज यह तीसरा दिन है जब सी०आई०ए० की गतिविधि पर यह सभा विचार विमर्श कर रही है । इसके पूर्व सदन के माननीय सदस्यो के विचार यहाँ आये और अच्छे विचार आये अपने-अपने ढग के और सब लोगो ने कहा कि गवर्नमेट इस मे दिलचस्पी ले । इधर हाल साल में जब प्रदेश के मुख्य मत्रियो का सम्मेलन हुआ था तो उस समय प्रधान मत्री जी का यह बक्तव्य आया था कि इस देश मे सी० आई० ए० का काम बढ़ रहा है और वह बड़े जोर शोर से काम कर रहा है । सारे देश का ध्यान उस ओर गया । यह मुनासिब ही था । जब प्रधान मत्री ने इस तरह की बात कही तो समूचे देश का ध्यान उस ओर जाना लाजमी था और दूसरे राजनीतिक नेता भी थे । उन्होने भी कहना शुरू कर दिया और करीब-करीब पिछले 15-20 दिन से सारा देश सी० आई० ए० मय हो गया । तमाम हिन्दुस्तान की पार्टियो ने, तमाम लीडरान ने, हम लोगो ने, सभी ने सी० आई० ए० पर जोर दिया और ऐसा लगा कि हिन्दुस्तान मे जो कुछ हो रहा है वह सब सी० आई० ए० कर रहा है और कोई कुछ नही कर रहा है । इतना प्रभुत्व सी० आई० ए० को दिया गया कि हम लोगो को भी आश्चर्य हुआ । जिस दिन प्रधान मत्री जी ने अपना वक्तव्य सी० आई० ए० के बारे मे दिया था उस के दो चार दिन पहले ही सारे सी० आई० ए० के एजेंट यहा आ गये और उन्होने अपना काम शुरू कर दिया और अपना तमाम प्रचार शुरू कर दिया यह बात कुछ समझ मे नही आती है । यह जरूर समझ मे आता है कि यह सी० आई० ए० पहले से काम कर रहा था । यह व्यवहारिक बात है और दूसरे देशो की इटेलिजेंस के जो एजेट है वह भी यहा काम कर रहे हैं । चूकि इस देश के बड़े-बडे राजनीतिज्ञो के मुह से यह बात निकली इस लिए सारे देश को इस के लिए चिन्ता हुई और सब से वेशी चिन्ता यहा की पब्लिक को हुई । साहब क्या देखते हो इस तरह की बाते हो रही हैं । तो सवाल यह देश में जो सी० आई० ए० के एजेन्ट काम कर रहे हैं तो समाज के, देश के कौन तबके के लोग है जो सी० आई० ए० से साठ-गाठ कर-कर के हमारे देश की राष्ट्रीयता पर खतरा लाना चाहते हैं । यह मै साफ कह देना चाहता हूं, जरा सोचिये किस वर्ग के लोग है समाज के ? और क्या जनता है ? हिन्दुस्तान की जनता कभी नही है । हिन्दुस्तान की जनता की जानकारी के लिए तो प्रस्ताव आया है कि सी० आई० ए० की एक्टिविटीज इतनी बढ़ गई है कि हम देश को जताना चाहते है कि क्या बात है, सरकार इस पर स्टेटमेट दे । यह तो ऐसी बात है कि हिन्दुस्तान की सामान्य जनता जिसको हम रिप्रेजेंट करते है, जिसकी दुहाई देते है, जिसका नाम लेते है, वह इसमें कभी नही है । मेरे ख्याल से सी० आई० ए० के

[श्री भोला पासवान शास्त्री]

साथ साठ-गाठ करने वाले वही सफेदपोश लोग हैं जो होशियार है, समाज मे चलते-पुर्जे लोग है, राजनीति करते है, देश विदेश जाते है, घूमते फिरते है, जो प्लेन पर चढ़ते है, कपड़ा अच्छा पहनते है, क्योंकि प्रलोभन सी० आई० ए० देता है। पहला आकर्षण तो उसके पैसे का है। जरूर पैसे का है। कितने बड़े-बडे बिजनेसमेन हो सकते हैं जो अमरीका, इंगलैंड या चीन या रूस में जाते है? सामान्य जनता कितने प्रतिशत हवाई जहाज मे चढ़ती है। बात यह है, जो बोइग चलता है, किस क्लास के लोग बोइग मे चढ़ते हैं? आजकल वही क्लास के चलते है? या सरकारी अफसर है, मिनिस्टर है। सामान्य जनता की ऐसी हालत नही है कि वह हवाई जहाज से उड़ कर तुरंत अमरीका जाए, मास्को जाए, टोकियो जाए, कही और चली जाए और जब मन आए टिकट कटा ले। ऐसी सुविधा सामान्य जनता के लिए नही हुई। दस परसेंट लोग है, मोस्टली उसमें सरकारी आदमी है जो जाते-आते रहते है, अच्छे काम से भी जाते है। उसी में पकड़ना मुश्किल है। पोलिटिकल पार्टी के लोग हो सकते है क्योंकि सारा यह जो कहा गया है सी०आई०ए० के बारे में जो हमने बहस सुनी है, इस सदन में जो बहस हुई है उसमें कहा है कि कोई रूस का एजेन्ट है, कोई अमरीका का एजेन्ट है, कोई चीन का एजेन्ट है। इस तरह की बाते होती रही है। उपसभापति जी, मेरा अपना विश्वास है, हम किसी भी देश के एजेन्ट को अपने यहां बर्दाश्त नही करेंगे, चाहे कोई हो। वह चाहे अमरीका हो, चाहे रूस हो, चाहे चीन हो, चाहे बाहर का कोई और देश हो, उनका कोई भी एजेन्ट इस देश का काम करता है वह देश का ग़द्दार है, समाज-विरोधी तत्व है। बड़ी मुश्किल से हमने अपनी आजादी हासिल की है। इसमें जिसके पैरों मे बिवाई नही फटती है वह तकलीफ नही जानता है। आज हमारे देश में भावना है कि आपको रूस से कैसे खबर मिल गई, आप रूस के एजेन्ट है, साहब, आपको अमरीका की खबर कैसे मिल गई, आप तो सी० आई० ए० के एजेन्ट हो। यह तो सदन को विचार करना चाहिए हमारे देश में सी० आई० ए० का एजेन्ट हो, उसको हम दुरुस्त करेंगे। इस बात में हम सब एक है। जहां देश का सवाल आएगा, देश को खतरा आएगा, हमारी राष्ट्रीयता पर खतरा आएगा, हमारी सावरेनिटी पर खतरा पहुचेगा; तो हम सब एक है। फिर बाकी को हम अपने देश में लड़ लेंगे, हमको इसमें झगड़ा करने की बात नही है जिस तरह की सरकार कायम कीजिए, जैसा चाहो वैसा समझौता हो जाएगा, यही पर हो जाएगा। जनता चाहेगी, वोटर चाहेंगे यहां साम्यवाद ही ला दो तो हो जाएगा, अगर डिक्टेटरशिप हो जाएगी तो डिक्टेटरशिप चलेगी अगर डेमोक्रेसी चलेगी तो डेमोक्रेसी चलेगी। यह तो जनता के हाथ में है। आज जनता की दुहाई देकर हम सब बात करते है, वह तो सी० आई० ए० से अलग है। यह गरीब जनता सी० आई० ए० को नही जानती, यह बात आप लोग कर रहे है।

एक दफे हुजूर, हमने भी सुना कि जो 1967 का चुनाव हुआ था हमने अखबार मे पढ़ा था कि सब पार्टियों को रूस और अमरीका से नामा आता था, किसी को अमरीका से पैसा मिला इलेक्शन लड़ने के लिए और किसी को रूस से मिला। ऐसा कोई आदमी है जो इलेक्शन लड़ता है, इलेक्शन लड़वाते है। फिर हमने सुना कि उस पर बातचीत भी हुई थी। फिर सुना कि रिपोर्ट भी निकली। हमको उसी वक्त चिन्ता हुई

थी कि यह क्या मामला है। विदेश से जो कोई किसी को पैसा देगा वह किसी का मुह देखकर तो देगा नहीं, वह तो मतलब से पैसा देगा। आपको पैसा देगा, आपको एजेन्ट बनावेगा, आप से अपने देश के खिलाफ काम करवायेगा। जब पैसे का मामला आता है, तो किसको अच्छा नहीं लगता है। हमने बहुत आदमियों को देखा है कि जब चांदी के जूते पड़ते है तो सब का मन फिर जाता है। कितने लोग है जो नेशनल करेक्टर वाले है? कितने लोग है जो पैसा मिलने पर देश के नाम पर कोई दुर्भाव नही रख सकते है, देश की हत्या नहीं कर सकते है? हमारा चरित्र जो है राष्ट्रीयता का वह बिगड़ रहा है। आज इतना हल्ला होता है सी० आई० ए० का क्यों होता है? जो नागरिक अपना देश समझता हो, ऊपर से लेकर छोटे तक जिसमें राष्ट्रीय भावना है, राष्ट्र का चरित्र है, नेशनल करेक्टर है, वह कभी इस तरह की बात नही कह सकता। कभी सुना आपने कि हमारे सी० आई० डी० रूस में गये, वहां जायेंगे तो मार करके हुलिया टाइट कर देगे। लेकिन हमारे यहां यह बात हो है। हम इसकी चर्चा करें, सदन में जो चर्चा हो रही है कि हमारे देश मे सी० आई० ए० काम कर रहा है, जोरों से काम कर रहा है वह अच्छा नही है। पिछले दिनों जो बहस हुई थी उसको लेकर हमने लाबी में पढ़ा, उसमें जितनी बातें है वह बड़ी इंटरेस्टिंग है, बड़ी नावेल है कि वह कंपनी है, उसमें पैसा है, उसका आफिस वहां है आदि पढ़ने की चीजें है। हमको तो इन बातों का इल्म नही है, इंफार्मेशन नहीं है। हां एक ही बात का हमको इल्म है, एक ही इंफार्मेशन है कि सी० आई० ए० एजेन्सी हमारे देश मे आवेगी तो हमारे देश का क्या हो जाएगा। हम लोग कहां चले जायेंगे, यही चिन्ता हमको है। कौन सी० आई० ए० का एजेन्ट है, कौन कौन उनका आफिस है, हमें यह पता नही है। मै इस लिए बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं कि इस देश की राष्ट्रीयता पर, इस देश के जन जीवन पर, इस देश के राष्ट्रीय जीवन पर जो नजर उठायेगा, उसकी हम आंख निकाल लेंगे। हम इसलिए बोलने के लिए खड़े हुए है। कोई भी हो, उसको नोटिस में लाना चाहिए, उसको सबक देना चाहिए कि तुम देश-द्रोही हो, तुम देश-द्रोही का काम करते हो, चाहे वह हों, चाहे हम ही क्यों न हों, चाहे हजुर ही क्यों न हों, उसमें सब आ जाते है। कही पर स्टुडेन्ट्स का आन्दोलन, कही भाव बढ़ गया, ये जितनी बातें है उनमे सी० आई० ए० का हाथ है तो सी० आई० ए० यहा रूल करे, वही शासन चलाये, यहां भी वही लोग बैठेंगे, कानून बनायेंगे, वही रूल करेंगे तो यह बड़े आश्चर्य की बात है। यह तो जो हम वर्णन करते है, इसकी चर्चा भी नही होनी चाहिए। चर्चा यह होनी चाहिए कि फलां सी० आई० ए० का एजेन्ट पकड़ा गया। बात असल यह है कि जब आदमी को मुफ्त का पैसा मिलता है, चाहे रूस से मिले चाहे अमरीका से जिससे भी मिले और जब हम प्लेन से उतरते है यहां से पटना जाते है तो वहा पर मोटर लेकर खड़े रहते है, कपड़े अच्छे रहते हैं, लोगों को रिसीव करने के लिए तैयार रहते हैं, ऐसा सुख कौन नही चाहता, यह सुख तो बड़ा अच्छा है, इसमे मजा है।

इस वक्त मुफ्त का पैसा है और यह सब चाहेंगे कि इसको लिया जाये, इस तरह की बात यहां देखी जाती है। सभी अपने देश को बेचकर, अपने देश में जासूसी का काम करने के लिए और अपने स्वार्थ के लिए ऐसा कार्य करते है। इस का कारण है। मेरी राय में तो इस वक्त हमारे देश का चरित्र बिगड़ रहा है। स्वराज्य होने से पहले जो गान्धी जी ने, महान नेताओं ने देश में एक जाग्रति लाई थी, जो देश को एक तस्वीर दिया था जिसकी वजह से जन जीवन आकर्षित हुआ था, खुराक मैन्टल दिया था, वह सब अब नही रहा और अब हम एक भोगी युग में जा रहे है। हमे सुविधा प्राप्त हो गई है और सुविधा मिलने पर सब कुछ कर सकते हैं और देश को भी बेच सकते है। एक तरह से यह एक भयावह स्थिति और तस्वीर है। अगर

[श्री भोला पासवान शास्त्री]

नेशनल करैक्टर इस तरह का हो जायेगा, तो यह एक गम्भीर बात है ।

आज साउथ वियटनाम और नार्थ वियटनाम लड रहे है । दूसरे युद्ध के बाद बाहर के लोगो ने एशिया के देशो को लडाया । हिन्दुस्तान के दो टुकडे किये, इडोनेशिया के दो टुकडे किये, साऊथ वियटनाम के हुए, यह तो मोटा मोटा मुझे मालूम है । उनकी नीति यह रही, लडाओ और अपना प्रभुत्व कायम करो और अपनी सुपीरियरटी कायम करो । जो कालोनियल कन्ट्री है, वहा के जो नागरिक है, यह देखा गया है कि उनका चरित्र गिर जाता है क्योकि उनके ऊपर अपना राष्ट्रीय जीवन पनपने का कोई मौका नही रहता है और फिर शासन नागरिक जीवन से हिल मिल जाता है और इस तरह से राष्ट्रीय जीवन पनपने नही पाता है, जब कि गाधी जी के नेतृत्व ने पनपा दिया था । हम ने उस समय क्या किया था हमने अपने चरित्र के बल पर अपने देश को आजाद कराया, लेकिन आज जब लोग स्वतन्त्र है जब इस तरह की बात सुनते है, तो मन में बडा दुख होता है, बड़ी तकलीफ होती है कि आज यह स्वराज्य तब ही हुआ, इसलिये हुआ कि लोग एजेन्टो का काम करे आज यह सुनने मे आता है कि यह एजेन्ट है, वह एजेन्ट है, इतना पैसा आ रहा है, उतना पैसा जा रहा है । यह अमरीका का एजेन्ट है और वह रूस का एजेन्ट है, तो इस तरह से कोई अमरीका का एजेन्ट है और कोई रूस का एजेन्ट है, इस तरह की बातें सुन कर मन मे यह सोचते है कि क्या इन्ही बातों को सुनने के लिए स्वराज्य आया

एक बात और गवर्नमेंट की तरफ से कही गई है, यह बात मैंने अखबार में पड़ी थी, अखबार की बात है कि हम यह नहीं बतलायेंगे कि सी० आई० ए० कहां कहां काम करता है, कहां कहा पर है, कौन कौन लोग उसमें काम करते है । इस डिटेल पर नही जायेगे लेकिन सी० आई० ए० के एजेन्ट काम कर रहे है । यह बात जरा तर्कयुक्त मालूम नही पड़ती है । आज देश चिन्तित है और हर एक कहता है कि सी० आई० ए० हमारे देश मे काम कर रहा है । जनता इस बात के लिए चिन्तित है कि वे कौन लोग है और उनको पकडा क्यो नही जाता है । हम लोग भी जाने कि वे कौन लोग है । अगर यह बात बतलाई नही जायेगी तो ऐसा लगता है कि इसमे कोई रहस्य है इसमे क्या बात है और इस चीज को बतलाया जाना चाहिए ।

आज डिबेट को हुए तीसरा दिन हो गया है, उस सभा मे तो डिबेट हो भी गई है । मेरा ख्याल है कि वहा पर सरकार का जवाब भी हो गया है और उसने कहा है कि शायद इस पर वह बिल लाने वाली है । लेकिन हम लोग यह जानने के लिये ख्वाहिश-मन्द है, बडी क्यूरोसिटी है कि एसे दो-चार आदमियो के नाम बतलाए जाए, ऐसे दो चार पालिटिकल पार्टीज के नाम बतलाए जाए, उन के नाम सुने की वे कौन कोन हस्ती है जो सारे हमारे देश को कुरबान कर रही है, जो सारे देश को बरबाद कर रही है ? चन्द आदमी अपने स्वार्थ के लिए, चन्द पोलीटिशियन्स अपने स्वार्थ के लिए, जिनका गिरोह स्वार्थ के लिए है वे ही इस तरह की बाते कर सकते है जो कि बड़ी खराब बात है । इस तरह की बात नही होनी चाहिए ।

हमे बतलाया गया है कि बिजनैसमैन यहा पर आते है, जाते है, प्रोफेसर, विद्यार्थी और दूसरे लोग वर्ल्ड से यहा से वहा जाते है और वहां से यहा आते है, इस तरह से यह अच्छी बात है । अपने देश के और विकसित देश के आदमी इस तरह से वहा जाते है शिक्षा के लिए और वहां से सीख कर आते भी है जो कि एक अच्छी बात है । लेकिन इसका एक दूसरा भी पहलू है जिसके लिए हमें खबरदार रहना चाहिये और मुस्तैदी से काम करना चाहिए । आखिर जो हमारी सी० आई० डी० है वह क्या काम करती है । जब आजादी के दिन थे तो ये लोग केवल पोलिटिकल आदमियों को पकड़ते थे, हम लोगो को पकड़ा करती है और जो लुच्चे लफगे होते थे, बदमाश होते थे उनको

छोड़ देती थी। इसलिए आज हम सब लोगों को यह कर्त्तव्य हो जाता है कि जो इस तरह के लोग देश में गड़बड़ कराते हैं उनसे हमें खबरदार रहना चाहिए और हमारे सी० आई० डी० को भी होशियारी के साथ काम करना चाहिए। इस तरह की चीज अगर जनता के बीच मे चली जाती है तो उससे सारे देश को चिन्ता होती है।

हम को याद है, ठीक याद है, जब हम बिहार मे थे, तो जवाहरलाल नेहरू जी एक फोर्टनाइटली रिव्यू छापते थे। उसमे वे बहुत अच्छे लेख लिखते थे। वह अंग्रेजी में होना था और एक पखवाडे मे निकलता था और दुनियाभर की महत्वपूर्ण घटनाएं होती थी, राजनीतिक घटनाएं होती थी उनका उनमें कमेन्ट रहता था।

अगर कोई राजनीति का विद्यार्थी उसको कम्पाइल करके बुक फार्म मे छाप दे तो विश्व इतिहास में शामिल हो जाय और उस समय की राजनीति का अच्छा साहित्य हो जाय। उसमें उन्होंने कहा था, स्टेट गवर्नमेंट को इंस्ट्रक्शन दिया था कि यह अच्छी बात है कि हम लोग बाहर जाते हैं, हम लोगों को दुनिया के मुकाबले में आगे बढ़ना है आर्थिक दृष्टिकोण से, सामाजिक दृष्टिकोण से, खास कर आजकल की जो मोडर्न एमेनिटीज हैं, टेक्नोलोजी है उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए जाना चाहिए, लेकिन साथ साथ दूसरे देशों का जो दूसरा धन्धा है, जो हमको लैट डाउन करना चाहते हैं, दबा कर रखना चाहते हैं उससे हमें खबरदार रहना चाहिए जो आदमी फारेन कन्ट्रीज जाते हैं, उनकी काफी छानबीन करनी चाहिए ताकि हमको धोखा न हो। इस तरह का लेसन माननीय पंडित जी ने दिया था और हमको अच्छी तरह से याद है। हमको बडा आश्चर्य था कि पंडित जी इतने बड़े आदमी है कैसे इतना सब काम करते है लेकिन उनको देश का ख्याल था, जिस आजादी को लाए थे उसकी ममता थी। उन्होने बराबर आगाह किया था कि हमें ऐसे लोगों से बचना चाहिए।

उपसभापति महोदय, मेरे पास कोई सबूत नही है कि मैं सबूत दू कि ऐसा ऐसा है। मेरा मन बोलने का इसलिए हो गया; क्योकि इस तरह की बात जो होती है वह बर्दाश्त के बाहर होती है। चाहे मैं अकेला ही आदमी हूं, मैं इस बात को बर्दाश्त नही कर सकता। हमारी विदेश नीति इतनी अच्छी है —जो मैंने सुना, इस सेशन में—कि हम किसी का राज्य हड़पना नही चाहते, हम किसी पर चढ़ाई नही करना चाहते, किसी की जमीन को छीनना नही चाहते, हम सम्मान के साथ रहना चाहते है, भाईचारे के भाव के साथ रहना चाहिए, मनुष्य बन कर जिन्दा रहना चाहते है, मनुष्योचित काम करना चाहते है, दुनिया अच्छी बने, अच्छा समाज हो ऐसा करना चाहते हैं। इसके बाद हमारा नाता-रिश्ता रहेगा, फारेन पालिसी रहेगी। कोई भी देश हमारी मदद करे—मैं नाम नही लेना चाहता—लेकिन अगर वह हमारे राष्ट्रीय जीवन पर, हमारे जातीय जीवन पर, हमारे जन-जीवन पर लालचभरी निगाह से देखता है तो हम उसको बर्दाश्त करने के लिए तैयार नही हैं। चाहे हम सूखी रोटी खाएगे, उनके पैसे से मलाई नहीं खाएंगे, अपने देश के प्रति यही भावना मेरी रही है। यह जो बहस हुई है, मुझे इसमें सुन कर दुःख हुआ कि अमरीका ने इतना पैसा भेजा, रूस ने इतना पैसा भेजा, चीन के एजेन्ट पूर्व में काम कर रहे हैं। इस सब बात को आज आप बन्द कीजिए। आज हम यहां पर बैठे है, हो सकता है कि हम उधर चले जायें, आप लोग इधर चले आएं, जनता भेजेगी तो आएगे, कोई छोड़ने वाला नही है। फिर साम्यवाद आएगा तो हम रोक नही सकते लेकिन वह हमारा होगा, हम दूसरे के एजेन्ट्स नही होगे, वह हमारे देश मे विकसित होगा, हमारे देश मे पनपेगा, अपने ढंग से पनपेगा, हमारी सस्कृति के मुताबिक पनपेगा, ऊपर से लादने से समाजवाद, साम्यवाद नही होगा,

[श्री भोला पासवान शास्त्री]

जो हमारा राष्ट्रीय जीवन है उससे विकसित होगा। तो इन बातो को सुनकर मुझे दुःख हुआ था और जो मेरी राय थी वह मैंने जाहिर की।

श्री नवल किशोर (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदय, श्री श्याम लाल जी ने जो प्रस्ताव पेश किया है मै उसका समर्थन करता हूं। श्रीमन्, उनके प्रस्ताव में कहीं सी०आई०ए० का जिक्र नहीं हैं। उन्होंने यह कहा है कि जो फारेन इन्टेलीजेंस एजेन्सीज हमारे देश में काम करती हैं और जिनके बारे में यह शक हो कि वे हमारे राष्ट्रीय जीवन, हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा, हमारे राष्ट्रीय जीवन के जो आधारभूत तत्व व मूल्य है उनके साथ खिलवाड़ करती हैं उनकी जांच होनी चाहिए और उनको एक्सपोज किया जाय और वह एक्सपोजर तभी हो सकता है जब उसके लिए कोई कमीशन बैठे।

श्रीमन्, यहां जो भाषण हुए उनको मैंने बड़े ध्यान से सुना और पढ़ा। अगर उन भाषाओं को सच मान लिया जाय तो मेरे मित्र पासवान साहब की इच्छा और तमन्ना के बावजूद भी फिर हिन्दुस्तान में कोई आदमी ईमानदार नहीं है, कोई आदमी देशभक्त नही है। किसी ने चार्ज लगाया अपोजीशन पार्टीज के ऊपर, अपोजीशन पार्टीज ने इल्जाम लगाया किसी और पर . . .

श्री भोला पासवान शास्त्री : मैंने चार्ज नहीं लगाया।

श्री नवल किशोर : और अपोजिशन पार्टीज ने चार्ज किया शासकीय दल को, किसी ने कहा कि यूनिवर्सिटीज में पैसा आता है, रिसर्च फाउन्डेशन्स मे पैसा आता है, स्टुडेंट्स यूनियन के अंदर पैसा आता है। श्रीमन्, किसी ने कहा कि ट्रेड यूनियन के पास पैसा आता है और लोगों ने यहां तक कहा कि एम०पीज० और एम०एल०एज० भी इस में शामिल है और यहां तक कहा गया कि एजुकेशन मिनिस्ट्री और एग्रीकल्चर मिनिस्ट्री भी इसमें शामिल हैं। सरकारी सेक्रेटरीज के लिए कहा गया कि कोई होम सेक्रेटरी थे, कोई डिफेंस सेक्रेटरी साहब थे उन को भी इस के अंदर घसीटा गया और उन को भी खीचा गया। तो इस विवाद से एक बात साबित हुई कि अगर दुनिया में, हिन्दुस्तान के बाहर लोग हमारे भाषणों को पढ़ें, और मानी निकालें तो इसका उन पर यह असर पड़ेगा कि कोई तब्का हिन्दुस्तान मे आज ऐसा नही बचा जो कि सी० आई० ए० या दूसरे देश की इंटेलीजेंस एजेंसीज है उनके प्रभुत्व में न आ गया हो। श्रीमन्, इससे शर्मनाक चीज हमारे राष्ट्रीय करेक्टर के लिए और कोई हो नही सकती। एक बात मै और अर्ज करना चाहता हू। सी० आई० ए० की इपार्टेंस इसलिए और बढ़ गयी कि चूंकि हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब ने और रूलिग कांग्रेस के प्रसीडेंट साहब ने खास तौर से उसका जिक्र किया और यही नही, जब प्राइम मिनिस्टर ने कहा तो उस के बाद उड़ीसा के चीफ मिनिस्टर साहब ने भी कहा और उस के बाद ही पंजाब, काश्मीर और आसाम के चीफ मिनिस्टर साहब भी बोल उठे। यद्यपि यह सब चीजें पहले से चल रही थीं, मगर किसी को इस बात का इलहाम नही था, इल्म नहीं था, ज्ञान नहीं था कि हिन्दुस्तान में सी०आई०ए० काम कर रहा है, मगर जब शंकर दयाल जी शर्मा तथा प्रधान मंत्री ने कहा तो उसके बाद सब चेते। मैं एक बात जानना चाहता हूं। पासवान साहब चले गये। उन्होंने एक बड़ा पर्टिनेंट क्वेश्चन उठाया कि जब 1947 में श्री एलन डलेस ने सी०आई०ए० बनाया और उसके बाद ही हमारा देश आजाद हुआ और फिर हमारे और अमरीका के और चीन के संबंध हुए और यह सी० आई० ए० उस समय से हमारे देश में काम कर रहा है। यह बात सही है कि सी० आई० ए० की जो पृष्ठभूमि है, जो उसका रोल रहा है, जहां तक मुझे मालूम हुआ है अखबारों से और किताबों से यह कोई बहुत अच्छा नही रहा है। चाहे वह ईस्टर्न योरोप हो या लैटिन अमरीका हो, चाहे मिडिल ईस्ट

हो या अफ्रीकन कंट्रीज हों, हर जगह वक्तन-फवक्तन इस तरह की शिकायतें मिली है कि सी० आई० ए० के जरिये वहां की जनता को, वहां के लोगों को अपनी तरफ करके उनको घूस दे कर या लालच दे कर वहां की सरकारों के खिलाफ उनको गिराने का काम किया गया है और वहां गड़बड़ की गयी है। इतना ही नहीं, खुद अमरीका में, जहां की यह शाखा है, कहा जाता है कि कैनेडी साहब का मर्डर जो हुआ उसमें भी इसका हाथ है, पाकिस्तान में श्री लियाकत के कत्ल के बारे में भी यही है। मैंने पढ़ा अखबार में कि हिन्दुस्तान के प्राइम मिनिस्टर की जिन्दगी पर जो तीन, चार दफा एटेम्प्ट की गयी मुझे पता नहीं कि की गयी या नही, लेकिन वह सी० आई० ए० की तरफ से एटेम्प्ट की गयी, अगर मुझे खुशी है कि प्राइम मिनिस्टर साहब की तरफ से तो नही, लेकिन सरकार की तरफ से इस बात का खंडन हुआ और यह कहा गया कि यह बात बेबुनियाद है, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि प्राइम मिनिस्टर से हमारे हजार इख्तलाफात हों, लेकिन अगर किसी देश को यह जुर्रत होगी कि हमारे प्राइम मिनिस्टर की तरफ आंख उठा कर देखे तो हिन्दुस्तान के 55 करोड़ लोग, सारी जनता उसके खिलाफ खड़ी होगी। हमारा एक करेक्टर है और हमने अपने देश की आजादी हासिल की है और मैं कहना चाहता हूं कि ऐसी कोई भी पार्टी हिन्दुस्तान में नहीं है, ऐसे इंसान देश में नही हैं, इतने गिरे हुए नही हैं कि जो चन्द पैसे के टुकड़ों पर अपनी जमीर को बेच कर देश की आजादी के साथ खिलवाड़ करना चाहते हों, ऐसा कोई नही है देश में कि जो राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ खिलवाड़ कर सकता हो। साथ ही जो कानून से बनी व चुनी हुई जनता की सरकार है अगर उसको गिराने की कोई बाहरी तत्व से मिल कर अगर कोशिश करेगा तब उसको यहां बर्दाश्त नही किया जायेगा चाहे वह किसी भी पार्टी में हो और उस को हम लोगों को एक्सपोज करना चाहिए। एक बात पर मुझे हंसी आयी। प्राइम मिनिस्टर साहब ने कहा कि सी०आई०ए० इस बात को सिद्ध करे कि वह हिन्दुस्तान में एक्टिव नहीं है। मैं कहना चाहता हू कि यहां हमारे बहुत से दोस्त बैठे हैं और वह लोग कानून को जानते है। यह किसी अच्छे जुरिस्प्रुडेंस की बात नही है कि जब आप किसी को कहते है कि वह मुलजिम है और वही सफाई दे, यह मुनासिब नही है। आप का फर्ज है कि आप उस को चार्जशीट दीजिये और मैं एक बात और कहना चाहता हूं। मैं यह भी जानना चाहता हूं कि आप की इन्टेलीजेंस क्या करती है, क्या सोती रहती है? मुनासिब तो यह होता की अगर बंगला देश की आजादी के बाद उनकी एक्टिविटीज बढ़ी हैं। तो प्राइम मिनिस्टर की तरफ से या फारेन मिनिस्टर की तरफ से एक नोट आफ प्रोटेस्ट अमरीका को पहले भेजना चाहिए था कि आपकी सी०आई०ए० की ऐक्टिविटीज हिन्दुस्तान में इस हद तक पहुंच गई हैं जब कि हमको मालूम पड़ता है कि वह सब्वर्शन करना चाहते है, हमारे देश के अन्दर वायलेंस को प्रोत्साहित करना चाहते हैं, हमारी जो नेशनल इनटिग्रिटी है उसके अन्दर गड़बड़ पैदा करना चाहते हैं।

हमारे दोस्त शंकर दयाल शर्मा ने शाहदरा के अन्दर जब झगड़ा हुआ, दिल्ली के अन्दर स्टुडेंट्स का झगड़ा हुआ, टीचर्स के झगड़े हुए तो उन्होंने सबसे पहले कहा ग्रांड अलायेंस इसकी जिम्मेदार है, मैं नहीं जानता कि ग्रांड अलायेंस कौन सी है, लेकिन मै एक बात जानता हूं कि ग्राड अयलायेंस इस कांग्रेस-ओ में होता तो मैं इसके अन्दर नही होता। लेकिन कोई शब्द नही कहे जाते जब कांग्रेस और मुस्लिम लीग का जो गठबंधन हुआ केरल के अन्दर, जो सी० पी० आई० कांग्रेस और मुस्लिम लीग का गठबंधन हुआ बंगाल में, उनको अन-डिगनिफाइड अलायेंस कहा जाए, डिस्ग्रेसफुल अलायेंस कहा जाए या मिनी अलायेंस कहा जाए? अगर वह बात

[श्री नवल किशोर]

नहीं चली तो कहा गया सी०आई०ए० कर रहा है। बड़ा जोर है सी० आई० ए० का। लेकिन आजकल सब मामला ठंडा है। अब कोई जगह चर्चा नहीं है सी० आई० ए० की। अब कहा जाता है कि फारेन इंटरवेंशन है। आज हालत यह है कि 9 यूनिवर्सिटीज हिन्दुस्तान के अन्दर बन्द हैं। पटना के अन्दर डिमांस्ट्रेशन हुआ, पंजाब के अन्दर मोगा में स्टूडेंट्स ने आग लगाई और सब काम किया, शाहदरा में हुआ, दिल्ली में हुआ, दिल्ली यूनिवर्सिटी बन्द है, बनारस और इलाहाबाद यूनिवर्सिटीज बन्द हैं, लखनऊ में भी एजिटेशन किया, राजस्थान मेडिकल कालेज बन्द हुआ और श्रीमन्, सरकारी इंप्लाईज जो हैं इनका संघर्ष भी होता है, उनके रोज अल्टीमेटम आते हैं, आंध्र में मुल्की रूल, को लेकर गड़बड़ शुरू हो गई। गुजरात में शक्कर के लिए एजिटेशन हुए, वहां गोली चली। असम के अन्दर भाषा के लिए दंगे हुए और गोली चलाई गई। क्या वाकई मैं इस बात को मानकर चलूं कि इस सब के पीछे सी० आई० ए० है? जबकि आसाम के गवर्नर ने इसका खंडन किया है, उसके पीछे अधिकतर आपकी नीतियों की विफलता तथा जनता का रोष है। इस सबके कहने की मंशा क्या थी? अगर इन बातों को कहने की मंशा यह थी कि वाकई सरकार के पास कोई ऐसे प्रमाण या तत्व हैं और उसके आधार पर देश के लिए अगर वार्निंग देना चाहती थीं प्राइम मिनिस्टर तो उन को अपोजिशन पार्टीज को भी कांफिडेंस में लेना चाहिए था। नेशनल सेक्यूरिटी किसी की बपौती नहीं है। न उसकी मोनोपली है। जहां देश की सुरक्षा का सवाल आयेगा, राष्ट्रीय जीवन के मूल्यों का सवाल आयेगा, सारी पार्टियां एक होकर आपकी मदद करेंगी। लेकिन अगर आपकी मंशा यह थी कि आप विरोधी दलों को बदनाम करें तो यह अशोभनीय बात है।

मुझे खुशी है कि मेरे दोस्त मालवीय जी ने बड़ी खूबसूरती के साथ सी० आई० ए० की एक्टिविटीज को बताया। मुझे उसके बारे में बहुत कम मालूम था, मगर साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि 1961 में पी० एस० पी० की जो कांफरेंस हुई थी उसमें कोई अमेरिकन लेडी आई थी। उसमें पंडित नेहरू के खिलाफ यह प्रस्ताव पास हुआ था कि इनको इस्तीफा दे देना चाहिए। वह जो लेडी आई थी, उनका वास्ता सी० आई० ए० से था। तो मालवीय जी ने इंडाइरेक्टली यह साबित किया कि पी० एस० पी० जो उस समय थी, यह सी०आई०ए० की साजिश में है। कोई जैक कार्नर यहां आये थे, ब्लैक नीग्रो वह ब्लैक होते ही हैं, ह्वाइट नहीं होते—उन्होंने वर्ल्ड एसेम्बली आफ यूथ कायम की जिसमें आल इंडिया यूथ कांग्रेस के उस जमाने के प्रेसिडेंट उसके प्रेसिडेंट हुए, अब वह इत्तिफाक से कांग्रेस-ओ के जनरल सेक्रेटरी हैं। मुझे पता नहीं वह इस वर्ल्ड यूथ के अब भी कुछ हैं या नहीं, लेकिन चूंकि वह कांग्रेस–ओ के सेक्रेटरी हैं, इसलिए कांग्रेस–ओ भी सी० आई० ए० के असर में आ गई।

फिर उन्होंने फरमाया कि पी० एल० 480 का जो पैसा आता है, उसमें से 20 परसेंट की अमेरिका को इजाजत है कि वह चाहे जैसे खर्च करे।

"Some percentage of it would be given to American subsidiaries in India That helped the growth of Indian monopolists. The money appropriated by the U.S. Embassy ran to 250 or 300 crores of rupees."

श्रीमन्, इसके मानी घुमा-फिरा के यह हुए कि जितने मोनोपोलिस्ट्स इंडिया में हैं, बिग बिजनैसमैन हैं, ये सब सी० आई० ए० के पैसे से बढ़े हैं। मुझे अफसोस है, वह एक जिम्मेदार व्यक्ति हैं, उन्होंने एक-दो एजेन्सीज की बात और कही होती, तब ज्यादा मुनासिब होता। उन्होंने यह बताया होता कि यह जो पीस कांफरेन्स है, इसके आफिस बीयरर्स को देने के लिए पैसा कहां से आता है क्या वह भी उस के मदी रहे हैं? पीस कांफरेन्स के नाम से जो हमारे दोस्त ट्रैवल

करते हैं, फारेन कन्ट्रीज में, उनके लिए पैसा कहां से आता है । हिन्दुस्तान में ऐसे लोग हैं, श्रीमन्, जिनको अगर छींक आ जाए तो छीक की दवा मास्को से आती है, यदि उनके बीवी-बच्चे बीमार पड़ते हैं तो उनका चेक-अप इंडिया में नही होता है, उनका चेक-अप मास्को में होता है । यह सब क्यों ? पैसा कहां से आता है और वहा से सांठ-गांठ क्या है ?

मुझे खुशी है, कुछ साथियों ने इंडोनेशिया की बात कही, चिली (Chile) की बात कही, मगर हंगरी की बात नहीं कही, चेकोस्लोवाकिया की बात नही कही, ईजिप्ट की बात भी नही कही और न सूडान की ही बात कही । तो आपने यह भी बताया होता कि के०जी०बी० के बारे में चीन का क्या ख्याल है ? इसमें कोई शक नही, रूस हमारा दोस्त है और आड़े वक्त काम में आया है, मगर यह बात भी सही है कि अमरीका भी अधिकतर आपका दोस्त रहा, 1962 में चीन से लड़ाई के समय वह आपका दुश्मन नही था और पंडित नेहरू की नान-एलाइनमेंट की पालिसी भी यही थी । वह चाहते थे कि सब देशों के साथ, चाहे बड़े हों चाहे छोटे हों, हमारी दोस्ती हो । वह डेमोक्रेसी के बड़े हिमायती थे, लेकिन अमरीका ने पिछले दिनों अपनी जिस नीति का परिचय दिया वह उसके हक में भी अच्छी नही थी और उसके कारण हमारे उसके संबंध भी स्ट्रेंड हो गए । एक समय चीन से भी हमारी बड़ी दोस्ती थी और हमने आवाज लगाई थी, 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' और भाई-भाई कहते कहते अब वह बाई-बाई हो गए, हमारे उसके ताल्लुकात खराब हो गए । (*Interruption*) कोई नही जानता . . . आप जरा गम्भीरता में आएं . . . कोई नहीं जानता, आज रूस के साथ हमारे ताल्लुकात अच्छे हैं, कल क्या होगा ?

श्रीमन्, एक बुनियादी बात कही जाती है कि :

"There are no permanent enemies and there are no permanent friends. There are national interests that are permanent."

उसको विचार में रखते हुए बैलेन्सड पर्सपेक्टिव्ह यह होता कि हम यह बात कहते, जैसा कि पासवान साहब ने कहा कि कोई भी एजेन्सी हो, चाहे चाइना की हो, चाहे रूस की हो, चाहे अमरीका, की हो, जो कोई भी हमारी आज़ादी के अंदर हमारी सार्वभौमिक सत्ता के ऊपर दखलअंदाजी करेगा उसे हम बर्दाशत नही करेंगे और हिन्दुस्तान के अंदर अगर कोई ऐसा ग़द्दार है, चाहे किसी पार्टी का हो, उसका हम मुंह काला कर देंगे उसको जनता के सामने एक्सपोज कर देंगे ।

मैं एक बात जानना चाहता हूं । कुछ साथी कहते हैं, मिशनरीज की बात और साथ ही कम्युनल पार्टीज के बारे में भी शक की बात कहते हैं । यह बात सही हो सकती है, लेकिन अगर आपके पास सबूत है तो आप उसको दें । पासवान साहब ने कहा, उन्होंने अखबार में पढ़ा था कि सन् 1967 के चुनाव में अमरीका और रूस का पैसा आया, ठीक है । निहायत शरम की बात है । चव्हाण साहब ने वायदा किया था और सी० बी० आई० ने इन्क्वायरी भी की है, वह इन्क्वायरी की रिपोर्ट भी आ गई है । पंत जी ने दूसरे हाऊस मे कहा कि रिपोर्ट तो आ गई है मगर यह जनहित में नही है कि उसको बताया जाए—क्वालिटेटिव्ह अमाउन्ट तो है नही सेलेक्टिव्ह है । मगर वह भी काफी है अगर सेलेक्टिव्ह भी है तब । हमको वह सब न भी बताएं लेकिन जो इन एजेन्सीज का मोडस आपरेन्डी है, जिन संस्थाओं के जरिए वे काम करते है, क्या उनको पंत जी ने या मिर्धा साहब ने या प्राइम मिनिस्टर ने आगाह किया है ? इतना ही पता दे दे कि किन किन संस्थाओं को हिन्दुस्तान में आपने आगाही दी है कि सी०आई०ए० जैसा होशियार, मगर खतरनाक भेड़िया आपके घर में है, कम से कम अपना दरवाजा तो बंद कर लो । तो आपकी इस इन्क्वायरी का क्या फायदा होगा, हमको आप बताएंगे नही ?

[श्री नवल किशोर]

इस सुप्रीम पार्लियामेंट को भी हक नहीं है जानने का कि आपकी रिपोर्ट क्या है ? आप इस तरह से खिलवाड़ किए हुए हैं, आपने यह बात खुद ही उठाई और तीन महीने के बाद आपकी आवाज़ स्वयं ही बंद हो गई। क्या मैं यह समझू कि वहां अमरीका के जो सेक्रेटरी आफ स्टेट हैं, मिस्टर रोजर्स, क्योंकि उन्होंने सरदार स्वर्ण सिंह को यह कह दिया कि —'CIA is not working against the interests of India'. आप चुप हो गये।

अगर इतने एश्योरेन्स के लिए आपने यह तमाशा किया था, तो मैं समझता हूं इसको अब बंद किया जाए चूंकि आपकी जो मन्शा थी, पूरी हो गई। लेकिन कोई चीज़ को उठाने के पहले—प्राइम मिनिस्टर कोई मामूली हस्ती नहीं है, वह एक पार्टी का ही स्पोक्समैन नहीं है, प्राइम मिनिस्टर जो भी इस तरह की बात करता है या करती हैं नेशनल इश्यू पर, तो वह 55 करोड़ लोगों की आवाज़ होती है—She speaks as the mouthpiece of the whole nation. उन्होंने इतनी बड़ी बात कही। उन्होंने तो के० जी० बी० के बारे में भी कहा था, लेकिन ओम् मेहता जी ने खड़े होकर कह दिया कि साहब, पार्लियामेन्टरी पार्टी मे ऐसी बात नही हुई। खैर, हमने उनकी बात को मान भी लिया, लेकिन अखबार में तो के०जी०बी० के बारे में भी आया है। तो मैं यह कहना चाहता हू, हो सकता है जब तक हमारा दोस्त अमरीका था, हमको सी० आई० ए० की हरकतों से अंदेशा नही हुआ। मैंने तो इतना तक पढ़ा कि जो सी०बी०आई० है आपकी, इसकी जो ट्रेनिंग है, इसको जो इक्विप किया गया है इसमें भी अमरीका का हाथ है, अगर सी०आई०ए० का न भी हो। मैं जानबूझ कर सी० आई० ए० से उसको जोड़ना नही चाहता हूं।

अमरीका मे तो जैक एन्डरसन जैसे निर्भीक व्यक्ति हैं जिसमे यह हिम्मत थी और है कि उसने सी०आई०ए० के कारनामों का भंडाफोड़ कर दिया। जैक एन्डरसन ने बंगलादेश के संघर्ष के जमाने में यह लिखा था कि केबिनेट के सोर्स से यह खबर मिली है कि हिन्दुस्तान वैस्ट पाकिस्तान को डिसमेम्बर करना चाहता है। क्या सरकार ने इस बारे में मालूम किया कि वह केबिनेट का सोर्स कौन था ? अगर जैक एन्डरसन की हर बात प्रमाण है और आखिरी सत्य है, तो मैं अपने दोस्त श्री मालवीय जी से यह जानना चाहता हूं कि क्या सरकार ने इस बात की इन्क्वायरी की कि वह केबिनेट सोर्स क्या था ; हू इज दैट मिनिस्टर ? सरकार द्वारा इस बात का भी खन्डन नही किया गया कि यह बात गलत है और बेबुनियाद बात है।

दूसरे हाउस मे कहा गया है कि रूस की मदद से पिछले दिनो हिन्दुस्तान में 167 आंदोलन चलाये गए है, जिसमे सात पार्टियां इन्वाल्व हैं। इस बात का भी खन्डन नही किया गया, क्यों नही किया गया। मैं यह जानना चाहता हूं। मैं आपसे यह अर्ज करना चाहता हूं कि पटना के अन्दर सी० पी० आई० की रैली हुई थी। वहां पर एक बडा भारी लाखो का डिमान्सट्रेशन हुआ था और अब मार्च में देहली मैं होने वाला है, तो मैं नही जानता हूं कि उसके पास इसके लिए कहां से फंड आया या आता है; क्योंकि सी० पी० आई० एक मजदूर पार्टी है, गरीब आदमियों की पार्टी है।

AN HON. MEMBER: As they say.

SHRI NAWAL KISHORE: Yes, as they say.

वह पैसा कहां से आया। शायद वह सब पैसा के० जी० बी० से आया होगा। यह भी गलत है; क्योंकि हम यह चाहते हैं कि कोई भी देश हिन्दुस्तान के अन्दरूनी मामलों मे किसी तरह से भी दखल न दे। मुझे तो यह मालूम हुआ है कि यह सारे का सारा पैसा एक मंत्री महोदय ने मुहय्या किया है। तो मैं यह कह रहा था कि कोई भी देश चाहे वह अमरीका

हो या कोई भी हो, उसे हमारे देश के मामलों में दखल नही देना चाहिये । मैंने अखबारों के अन्दर यह पढ़ा था कि रूस के द्वारा दबाव पड़ रहा है कि श्री कुमारमंगलम को डिप्टी प्राइम मिनिस्टर बनाया जाय, मै नहीं जानता हूं कि यह बात सच है या झूठ है ।

संसदीय कार्य विभाग तथा नौवहन और परिवहन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री ओम् मेहता): किस अखबार में थी यह खबर ? (*Interruption*)

श्री नवल किशोर : यह मैंने जो पढ़ा था आपको सुना दिया, हो सकता है कि यह निहायत गलत हो । (*Interruption*) आई विल हैव माई से । (I will have my say) इस तरह का प्रचार होता है, मगर मै इस बात को भी मानना और जानता हूं कि प्रधान मन्त्री जी किसी के भी इस तरह के दबाव से काम करने वाली नहीं हैं (*Interruption*)

श्रीमन्, मै आखिर में तीन, चार बातें कह कर अपना भाषण समाप्त कर दूंगा । श्रीमन्, एक बात मैं यह कहना चाहता हूं कि इस देश के अन्दर ऐसे लोग है, चाहे वे एम० पीज हो, नान एम० पीज हों, एम० एल० ए० हों, नान एम एल० ए० हो, जिन्हे डाइरेक्ट बाहर के देशों मे निमंत्रण मिलता है और वह उन देशों में जाते है । तो मै चाहता हूं कि इस तरह का जो निमन्त्रण इस तरह के लोगों को मिलता है उसको सरकार रोके । जिन को जाना हो वह सरकार के ही जरिये बाहर जायें ।

क्या सरकार इस बात को बतलायेगी कि जो हजारों, लाखों, करोडों, किताबें बाहर से आती हैं, उन किताबों पर पाबन्दी होगी या नही, क्योंकि उनको बेचकर यहां पर पैसा इकट्ठा किया जाता है । यहां पर कितने ही एसोसिएशन हैं, फोर्ड फाउन्डेशन का एसोसिएशन है, जिसने अब तक 134 मिलियन डालर इस देश में खर्च किया है और अकेले दिल्ली विश्व विद्यालय को 8 मिलियन डालर दिये गये थे सीधे, बगैर सरकार की जानकारी के बाद को उसको नियमित कर दिया गया । इस तरह की बहुत सी एजेन्सी हैं जिनका मैं इस समय नाम नहीं लेना चाहता हूं; क्योंकि मेरे पास समय नही है । मैं सरकार से यह मांग करता हू कि यह जो बाहर से कमिशन आती है, लिटरेचर आता है, रेमिटेन्सेज आते हैं, उनको वह रोके और इसके लिए कानून बनाएं । हमारे यहां से या उनके वहां से जो प्रोफेसर जाते और आते हैं, वह किस मकसद से आते हैं, इनमें पूरी छूट देना जैसा कि शास्त्री जी ने अभी कहा था कि यह अच्छी बात नहीं है, लेकिन इस बात की क्या सरकार जांच करेगी कि कौन लोग आते है और कौन लोग जाते है ? पीस कांफ्रेंस के नाम पर वहां पर कौन लोग जाते हैं, किन को पैसा मिलता है, इन सब चीजों की जांच होनी चाहिए । यही नही, जो कल्चरल एसोसिएशन है, एफ्रो-एशियन सौलिडेरिटी कांफ्रेंस है, इन्डो-सोवियत कल्चर, इन्डो-अमेरिकन कल्चर संस्था जो है, इन सब की जांच होनी चाहिए । आपने एक वादा किया था बजट के जमाने में—मिर्धा साहब आपने नहीं, उस वक्त पन्त जी ने जवाब दिया था, आप भी वैसा ही जवाब न दें, बल्कि ज्यादा समझदारी से जवाब देने की कृपा करें, मेरा मतलब यह नही है कि वे नासमझ हैं, वे बहुत समझदार हैं, तो सरकार ने वादा किया था कि वह कोई बिल लाएंगे जिसस वह इन सब चीजों के बारे में कुछ रोक-थाम कर पाएंगे । वह बिल आप कब लाकर पास करा रहे है ?

आखिर मे मेरी दरख्वास्त है—चाहे सी० आई० ए० हो—जैसा पासवान साहब ने कहा, मैं भी बड़े जोर के साथ कहता हूं, न हम शेअर-होल्डर हैं अमरीका के, न रूस के, न इंगलैन्ड के, न चीन के, न फ्रांस के, इस देश में जो फारेन इन्टेलीजेंस एजेन्सी है, वहां जहां तक इंटेलीजेंस इकट्ठा करने का काम है, उसको आप रोक नही सकते, वह उनका लेजिटिमेट काम है,

[श्री नवल किशोर]

लेकिन अगर वे हमारी नैशनल मोनोपोलीज, इंडस्ट्रीज के अन्दर, नेशनल इन्टीग्रेशन के अन्दर, नैशनल लाइफ के अन्दर सबवर्जन करे, सेबोटेज करें, हमको डिस्टर्ब करे, तो हम उसको बर्दाश्त नहीं करेंगे। अगर अपोजीशन पार्टीज को बदनाम करने की आपकी नीयत नहीं है और आप ईमानदारी से चाहते हैं कि देश का राष्ट्रीय जीवन स्वच्छ हो तो मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि हिन्दुस्तान की हर पार्टी आपके पीछे खड़ी होगी, क्योंकि देश पहले है, पार्टी बाद को है। लिहाजा आपका फर्ज है कि जो श्याम लाल जी ने मांग की है उस कमीशन को बिठाइए, ताकि जो इन एजेंसीज के विक्टिम्स हैं, जो इसके एजेन्ट्स हैं उनको वह एक्सपोज करे और उनके विरुद्ध कार्यवाही हो सके।

SHRI HIMMAT SINH (Gujarat) Mr Deputy Chairman, Sir, I welcome the sentiments which have been expressed on the other side the background of which is the fire of patriotism That sentiment has kept this country together and it is that very sentiment which was aroused when this country was in danger I want to remind my friends who have a tendency to brush everything with the same colour that time has come now when this country must learn to discern and find out who are the friends of this country and who are not the friends of this country

SHRI NAWAL KISHORE Therefore, I said that there are no permanent friends and no permanent foes

SHRI HIMMAT SINH I welcome your sentiment but not your same brush, and it is for that reason Mr Deputy Chairman that the Foreign Minister made it very categorical that you cannot say that this country's relations are the same with every country in the world This country's relations are determined by the reactions which we see from other countries

This resolution looks very innocuous on the face of it But it is pregnant with mischief Mr Deputy Chairman and it is for that reason that I want to lay bare the real intention behind this resolution

My friend Mr Nawal Kishore should not forget a very wise saying in Sanskrit

'राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बान्धवः'

That means those who stand with us in our moment of crisis and those who stand with us in our difficulties, those who help us to march towards our cherished goals, they are our friends

श्री नवल किशोर : सन् 62 में क्या हुआ था ?

SHRI HIMMAT SINH I would like to remind him of the atmosphere that was witnessed in this country on 9th August, 1971, the like of which had not been seen since independence if I may say without exaggeration On the 9th August, 1971, this country signed a treaty of friendship with the mightiest socialist power on earth, the Soviet Union and every person in this country, man woman and child acclaimed that treaty It was not something from the blue that the treaty came to be signed There was a whole history of fifty years of friendship, fifty years of common thinking, 50 years of common outlook sharing the same ethos and appreciating each other's difficulties That culminated in this most important step in the history of our country, the signing of the Indo Soviet Treaty And let us not forget that it is a treaty which has been signed for 20 years For 20 years we are committed to each other and we shall remain comrades in arms for 20 years Let no one make any mistake about it Therefore, it is not very easy for those who try to bracket the CIA with the KGB An hon Member in the other House was wearing the other day a badge on his chest 'I am a CIA agent' His idea was to ridicule it I know what type of activities are being conducted in the various parts of our country The same gentleman went to Gujarat and there he arranged for the distribution of such badges among the student Community One such badge is here Each student is supposed to wear this badge 'I am a CIA agent', in order to ridicule our protest Who gives money for manufacturing these badges? A responsible political party has a responsible programme It is not part of your programme that you shout and declare to the world that you are a CIA agent. And when you are questioned about it your answer on behalf of the CIA as it were is that this is part of their global strategy for, the CIA is supposed to gather information about the KGB and, therefore they are operating on such a vast scale in this country Now, I ask you Mr Deputy Chairman Is it permissible for any foreign agency to function in any country in order to gather information about what another foreign country is doing? I can understand legitimate functions of an agency of that kind But these functions are not legitimate functions These functions are beyond the scope of

normal functions That is why the Prime Minister, the Congress President and responsible Chief Ministers of States had to draw the attention of the people at large to it, because the common man of this country respects the sentiment which you expressed and which we share, but the common of this country, in pursuance of that sentiment, also looks with contempt and anger at the type of activities that the CIA is conducting

It was about a month ago, Mr. Deputy Chairman, that this Resolution was introduced in this House Therefore, with the passing of time, it is possible that the various nuances of this Resolution and the innuendoes behind this Resolution may perhaps be forgotten With your permission, therefore, I would like to refer to this Resolution in order to understand the real meaning behind the moves which the parties in the Opposition have mobilised, because they have nothing better to offer to the country and the people of this country

It says

> This House, noting the pronouncements of persons in authority and other political leaders about the activities of foreign intelligence agencies in India, "

"Noting the pronouncements—as if they are objecting to the pronouncements What is wrong with the pronouncements? And is it necessary to oblige you and give you details which impelled responsible people to make these pronouncements? Well, if your effort is to elicit information and make their activities more fruitful, then certainly a responsible party in power is not going to oblige you The other thing which is important to note is that they mention "agencies" Have you been able to mention one instance, one specific instance about the functioning of any agency other than the CIA, which can be regarded as anti national anti Indian, objectionable or as carrying on the criminal type of activities which this particular agency is undertaking?

SHRI T V ANANDAN (Tamil Nadu) On a point of order Sir Has my friend forgotten that the Communist Party of India in those days called Mahatma Gandhi Jawaharlal Nehru and Jayaprakash Narayan as fifth columnists of this country? And now you are giving them Cabinet posts

SHRI HIMMAT SINH I am not responsible for what the Communist Party of India may have said or may say now I am speaking on behalf of my party and the Government which is responsible for the programme of that party.

SHRI T V. ANANDAN They are your partners now

(Interruptions)

SHRI BALACHANDRA MENON (Kerala) It is wrong You may have differences. But never say things like this

MR DEPUTY CHAIRMAN Please do not interrupt him Let him continue Let there be no cross talk.

SHRI BALACHANDRA MENON I am speaking on behalf of my party It has never said 'Mahatma Gandhi is a fifth columnist' Please remember that .

SHRI HIMMAT SINH Mr Deputy Chairman, when they settle their score, they might do me this favour

MR DEPUTY CHAIRMAN Mr Balachandra Menon, you can make a speech Do not interrupt now

SHRI HIMMAT SINH The second part of the Resolution says

> " the impact of such pronouncements on public life and the morale and the health of Indian body politic,"

I would like to remind them that the morale of this country has gone higher because responsible people at the helm of affairs have not hesitated to call a spade a spade The common man of this country wanted this from the mouths of the higher people in the country and he had it The impact is not what you want, namely, to demoralise the people The impact is very clear and very categorical...

SHRI MAHAVIR TYAGI (Uttar Pradesh) I seek your permission to interrupt It is not a case of criticising the party in power What actually we are objecting to is that no action is being taken We are glad that they are acquainted with it, that they are aware of the danger But what we are sorry for is that no action is being taken

SHRI HIMMAT SINH These pronouncements are part of that action and actions speak louder than your words

Then, the third part of the Resolution is

> " the importance of an impartial probe into the matter with a view to clear up any doubts in the minds of the public and to expose such countries and other elements "

Now, as far as the Indian people are concerned there is no doubt in their mind as to who their friends are and who their enemies are The Indian people know from the history of 1971, the glorious year

[Shri Himmat Sinh]

of our history, 1971 the Indian people have learnt very carefully that it was through friendly assistance of people with whom we share many things in common that we were able to achieve those results which have now put this sub-continent on the path to peace

The last part of the Resolution is

> " Government should appoint under the Commissions of Inquiry Act, 1952, a high powered Commission headed by a Judge of the Supreme Court and consisting of . and submit its report

so that whatever information is available to the country may be available to other friends—"friends" I put in quotes—and they can do the work which is entrusted to them and that work is to undermine the integrity and the welfare of the common people of this country I am sorry to say when Nawal Kishoreji spoke he referred in very eulogical terms to the non alignment policy of the late Prime Minister Jawaharlal Nehru but let me remind him that it was this very non alignment policy which was disliked by the American Government and the representatives of the American Government said at that time that those who were not with us were our enemies and it was a tendency on their part to suggest that those who were not with them and whom they regarded as their enemies, they were classed as communists

Therefore, it is necessary to note particularly the welcome extended by the Soviet Government to our policy of non alignment while signing the Indo Soviet Treaty This is a sincere welcome to our policy If these two countries see eye to eye it is because these two countries realise the big responsibility that falls on their shoulders to preserve peace, it is because of the hard fight which the Soviet Union had to put up in order to achieve socialism in their country, and it is because of the geo political situation in which we find ourselves that we both feel anxious to preserve peace in this sub continent It is for this reason that this Resolution and the insinuations behind it must be discarded and thrown out with the contempt they deserve

I would like to say one or two things about the particular instances or particular methods employed by the CIA in their functioning We all know how our business concerns operate in regard to their business manipulations They have got their agencies here as well as in foreign countries It is my submission that in order to safeguard the vital interests of this country and the future industrial development of this country private business houses should not be allowed to have their own offices in foreign countries They should operate only through the commercial wings of the Indian Missions which function in foreign countries There is no reason why private concerns sould have their private bureaux and agencies in Switzerland, London, New York and other places.

The other thing which I would like to emphasize is that simultaneously with the disbandment of these private agencies functioning abroad on behalf of our private enterprises, is that we must also put an end to the so called foreign Air Travel Agencies in this country, because I regard that they function in a manner which is very dubious There is no reason why our Air India, on behalf of the foreign Airways, cannot take care of the requirements of foreign airline companies This is the third action which I should like to recommend to the Government for their serious consideration

The fourth is the functioning of Christian Missionaries Immense amount of evidence against them has come to light Apart from some genuine Missionaries, a large body of them, especially those emanating from America, are functioning in this country with some specific purposes and aims which are not in the interests of this country Apart from screening the type of propaganda which they undertake through their associates and other relations, they must be made to function through a common centralised agency under the supervision of the entire body of Christian community in this country

Lastly, by way of precaution, the Government must watch the functioning of the so called Yuvak Kendras because they function in a manner which is hardly conducive even to the interests of the youth of any country

4 P M

There is no department of academic life, there is no social activity, which is not influenced by the CIA and it is for that reason that one has to pinpoint and say that the CIA is and it must be exposed, it is the CIA which is conducting itself in a manner which is objectionable and therefore we concentrate our entire attention on that agency and those quislings through whom this agency attempts to function

Sir the history of this country is one of tolerance and we have a tendency to encourage all sorts of opinions for all sorts of activities in this country But Sir, when tolerance amounts to timidity or tolerance leads to connivance at the type of activity which can endanger the very foundations of

our democratic system, then that tolerance has to be curbed and we have to take appropriate action

SHRI MAHAVIR TYAGI Very good

SHRI HIMMAT SINGH One thing our elders in the past have warned us about the Americans is their intence desire to boss over others, and this bossism is not just in the ordinary meaning that it connotes But this bossism means overpowering of governments, overthrowing of governments, which are not to their liking and that is exactly what we have seen in different parts of the world My friends mentioned about Czechoslovakia Let me tell them that it was the unearthing of the plot in time that saved Czechoslovakia for socialism That saved Czechoslovakia to pursue its own future in a manner in which the Czechoslovakian people want Sir, is it not known to these people what actions are being organised through countries like Israel and others? If they realise the significance of these activities if they note with concern the type of functions that are organised on behalf of this agency then, Sir, they would be with us in condemning this activity and would not try to gloss over it as they have sought to do through this resolution which, in my opinion deserves the contempt and the wrath of the Indian people and it must be thrown out unanimously by this House Thank you, Sir

MR DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Mariswamy.

SHRI S S MARISWAMY (Tamil Nadu) Mr Deputy Chairman, Sir, I thank you very much for having allowed me to participate in this discussion

Sir, I rise to condemn the activities of the CIA in India At the same time, unlike my good friend, Shri Himmat Sinh, I also rise to condemn the activities of the KGB

Sir, my friend is confused because he thinks that by condemning the KGB we are condemning the Soviet Russia This country is grateful to the Soviet Russia for its timely help when we had a confrontation with Pakistan But, Sir, that does not mean that we must open our gates to the KGB people to come here and meddle in our internal politics and also to create chaos and confusion At the same time, Sir, we are also grateful to America for they have helped us at our critical times when we had a confrontation with our old allies, the "Hindi Chini bhai bhai" group They came to our help in time But, Sir, that also does not mean that we should open our gates to the CIA people to come here and meddle in our politics.

[THE VICE CHAIRMAN (SHRI V B RAJU) in the Chair]

We will be second to none in opposing the CIA if they are here to create confusion and pull down any government, whether it is headed by Shrimati Indira Gandhi or by any other Indian So, we must not be carried away by these empty slogans Whether this country is a socialist country or a country with extremist ideology, we have to go by our national policy, by our national interests only

Now, Sir, the problem is this I wonder whether the Government is serious about the CIA activities We are hearing now and then statements of the Prime Minister and at times of the Congress President, the Congress Secretary and other veteran Congress leaders like Shri Himmat Sinh about the CIA activities

They want the people to realise that CIA people are active in this country Well and good We have no quarrel with them But as a responsible Government it should have enough facts with it when it says that the CIA people are behind this and they are out to create mischief They must openly come out and take people into confidence and tell them' This is the activity of the CIA, you must beware of it But no responsible leader has come out with facts and taken people into confidence They talk in the air, which means nothing If they have all the facts, what prevents them from coming out openly and telling people?

Sir, the approach that they have now taken is what the Chinese say cynical approach There is a proverb in Chinese that I will take you as a rogue unless you prove to be otherwise' So the proof fell on the shoulders of the man whether he was innocent or otherwise This is an age old approach It was in vogue at the time when big landlords and fudals were ruling China The modern approach is not so As my friend, Shri Nawal Kishore, was saying that if you take anybody as a criminal or a murderer, you must serve him with a charge sheet, you must give him an opportunity to reply Where is the opportunity that they have given to the CIA? They are saying that they are active in India This is nothing by a cynical approach, and an approach which would not bring any result in this country So the Government must come out and say that this is the activity of the CIA and that the people must beware of it

Then, Sir, I wonder whether this Government is serious about what it is talking For example I saw yesterday in Madras a hoarding of the Air India one of the departments of the Government of India, about which my friend Mr Himmat Sinh,

[Shri S. S. Mariswamy]
also mentioned. They have a hoarding. There is a beautiful Maharaja—Air India Maharaja—standing on one corner, and this writing is on the other side of the hoarding:

"Breed, Oh my countrymen, Breed, until the time you are unable to breathe. Of course, the CIA is to blame."

This is the slogan. India is being ridiculed. People in large numbers stand at the corner and have a look at the hoarding. They laugh and laugh and say: What is this? I am told that Air India hoarding is displayed in Bombay. Thousands and thousands of people come and stand and look at it and laugh: It is a Government of India's wing it is run by the Government, our Karan Singh is the Minister. So, Sir, even a department of the Government has not taken CIA bogey seriously.

I would rather say that the Government should accept the proposition of Mr. Shyam Lal Gupta and appoint a Committee. If not, they must assure Mr. Shyam Lal Gupta that they would furnish all the details they have in their hands to the House or to the public and take them into confidence. So far as the Opposition is concerned, we are ready to cooperate with them. We will strengthen the hands of the Government.

So I would suggest that the Government must come out and accept the request of my friend Mr. Shyam Lal Gupta. Or they must take the House into confidence and say: These are all the facts we have.

Thank you, Sir.

पंडित भवानी प्रसाद तिवारी (मध्य प्रदेश): उपाध्यक्ष महोदय, इस प्रस्ताव पर दिलचस्प बहस हो रही है। मुझे इस में यह सूझ रहा है कि राजनीतिक सत्तात्मकता का संबंध हमेशा साम, दाम, दंड और भेद से रहा है। जब राष्ट्रों के राष्ट्रों से संधि, और विग्रह के संबंध होते हैं तो इन चारों तत्वों का उपयोग किया जाता है, कभी कम और कभी ज्यादा रूप में।

श्री मान सिंह वर्मा (उत्तर प्रदेश): अब तो दाम ही दाम रह गया है।

श्री सीताराम केसरी (बिहार): समझकर बोलिये।

पंडित भवानी प्रसाद तिवारी: आप सुनेंगे तो सब का भेद मालूम हो जायेगा।

श्री सीताराम केसरी: मतभेद पर नहीं, भेद पर।

पंडित भवानी प्रसाद तिवारी: उन का उपयोग राजनीतिक सत्तात्मकता में इस लिए किया जाता था कि राष्ट्र एक दूसरे के संबंध में पूरी जानकारी रखें और वह कभी कभी उन की शक्ति बढ़ाने के काम में आये और कभी दुश्मनी हो तो वे समझ लें कि जिस में हमारे राष्ट्र का अहित न हो ऐसे काम करें। इस लिए इन चारों तत्वों में एक भेद तत्व भी है और उसका जब तब उपयोग किया गया। आज की स्थिति में यदि किसी एजेंसी का उपयोग राष्ट्रीय हित में किया जाय तो किसी को क्या शिकायत हो सकती है। अपने अपने राष्ट्र के हित सभी देखते हैं और उन पर विचार करते हैं और तदनुसार अपनी नीति निर्धारित करते हैं। परन्तु यदि यह स्पष्ट हो जाय कि कोई राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्र को दलित करने के लिए अपने साम्राज्यावद का विस्तार करने के लिए, अपनी उपनिवेशवाद की नीति का संचालन करने के लिए इन का उपयोग करता है तो यह सर्वथा निन्दनीय है और कोई भी उस का समर्थन नहीं करेगा। अब इस की तो न जांच की जरूरत है और न समझाने की जरूरत है किसी समझदार को कि इतने दिनों से सी० आई० ए० जो करता आ रहा है। तो क्या यह सही नहीं है कि एशिया में, अफ्रीका में, कितनी ही सरकारें जो वहां की जनता की बनायी हुई सरकारें थीं वह उल्टी गई। क्यों साहब, क्यों उल्ट दी गयीं, क्योंकि आप को अपनी कठपुतली सरकारों को बनाना था कि जो आपके स्वार्थों की पूर्ति कर सकें और आप की महत्वाकांक्षा सारे विश्व पर साम्राज्य करने की है, उस को पूरा करने के लिए उस में सहायक हों। यह हम देख रहे हैं। जब यह इतना स्पष्ट है तो हम यहां और जांच क्या करें। तभी मैं ने कहा कि जरा इस बात पर हम सोच विचार करें कि आखिर प्रधान मंत्री को इस बात की आवश्यकता क्यों हुई कि उन्होंने सी० आई० ए० का स्पष्ट उल्लेख कर के राष्ट्र को सावधान किया। तो आप

जरा गंभीरता से विचार करें और केवल एक पार्टी द्वारा दूसरी पार्टी पर आरोप लगाने की दृष्टि से नही विचार करें। क्या हम अकेले राष्ट्र हैं जो किसी युद्ध से गुजरे हैं। यह बात जरूर है कि युद्ध बहुत दिनों बाद हमारे ऊपर आया है और बहुत दिनों में हम को विजय का गौरव हासिल हुआ है और बहुत दिनों के बाद शक्ति विग्रह में हम एक अच्छी स्थिति में खड़े हुए हैं, यह बात सच है, मगर पिछले युद्ध में विभिन्न राष्ट्र एक लड़ाई मे उलझे और उस के बाद उन पर जो आपत्ति आयी, आर्थिक, सामाजिक और दूसरी तरह की, उस को वहां की जनता ने साहसपूर्वक झेला और तब उस ने समझा कि युद्ध में इतना बड़ा त्याग करना पड़ता है और उसको बराबर करने के लिए कितने ही दिन तक एक राष्ट्र कष्ट भोगेगा। जो विजय वहा हुई उस की जय जय के नारे में हम शामिल हुए और आज आवश्यकता है बंगलादेश को मदद करने की, उसकी स्थिति संवारने की और जो खर्च हो गया है उसे पूरा करने की और इस के साथ ही हम को अपनी योजनाओं को सचालित करते जाना है। ऐसी स्थिति मे अगर देश में कोई कमज़ोर कड़ी पैदा करता है या उसका माध्यम बनता है तो उसकी ओर सावधान कराना कोई खराब काम है क्या ? वह तो नेता का कर्तव्य है, उसे करना ही चाहिए।

अब देखिये, हल्ला तथा शोर मचा दिया गया दोनों तरफ से। क्या यह सही नही है कि आपके राष्ट्र की स्थितियां विभिन्न वर्गों में उस जिम्मेदारी को उठाने के लिये तैयार नही है जो इस युद्ध के बाद, विजय के बाद आपके ऊपर आई ? मै इस बात को कहता हूं कि मेरी इस बात को कोई काटे कि कोई वर्ग इस देश मे आज ऐसा है जो कि बिक नही रहा है। क्या आज न्याय नही बिक रहा है ? क्या आज उत्तरदायित्व नहीं बिक रहा है ? क्या आज कानून नही बिक रहा है ? क्या आज गरीब बेचारा नही बिक रहा है जिसको कि खरीदने के लिये लोग खड़े हुये है। आप कभी-कभी ऐसी विषम बातें कहते हैं कि जनता आधी से ज्यादा उप-जीविका की स्थिति के नीचे जी रही है और कभी कभी इस बात को समझने की कोशिश नही करते कि एसी स्थिति में भी, ऐसी कमजोर स्थिति में जो इस एजेन्सी का उपयोग करेगा, आपके लोगों को खरीदने और आपके राष्ट्र को कमजोर बनाने की स्थितियां पैदा करता है, आपके ऊपर दबाव डालना चाहता है, उसके प्रति सावधान करना नेता का कर्तव्य है। यह बात जरूर है कि कभी कभी इस ऐजेन्सी की गलतियो मे अमरीका को, यू० एस० ए० को, स्वयं ही नुकसान उठाना पड़ा। जैसे मैं आपके ध्यान मे लाऊं कि जब बंगला देश के सम्बन्ध मे हल्ला हो रहा था और जबकि अमरीका मदद कर रहा था अस्त्र शस्त्र से पाकिस्तान की, तो इंदिरा जी ने, प्रधान मंत्री ने, स्पष्ट रूप से कहा था कि ये सब अस्त्र-शस्त्र की सहायता देकर पाकिस्तान को और कमजोर बनाना है। जब यह कहा गया तो इसके बारे में कुछ दिनों मे हमारे सामने आया कि जो कल समझते थे कि इन अस्त्र-शस्त्रों की सहायता मे शक्तिशाली बन रहे हैं, वह युद्ध के मैदान में धराशायी हो गये। ऐसी स्थिति में यह उपहास की मनोवृत्ति गलत है। आप देखिये हमारे यहां जब हम अकाल और सूखे की चर्चा करते है तो यू० एस० ए० में क्या प्रतिक्रिया होती है। जब आप सही भाव से भी कहते है कि हमारा तो कोई अमित्र नही है, हम सबसे मित्रता रखना चाहते है तो वहां छपता है कि इनके पास अनाज की कमी है, इसलिये ये मित्रता बढ़ाने आ रहे हैं जब कि हजारो बार यह कहा गया है कि किसी दबाव या इस शर्त से हम किसी के सामने झुकेंगे नही, चाहे वह कोई हो और यह नीति हमारी कायम है। नही तो यह क्या बात है कि प्रत्येक वर्ग मे यह नैतिक पतन हो रहा है। ऐसे इन नैतिक अधःपतन से इस राष्ट्र को बचायेंगे कि नही ? अगर बचाना है तो यह सावधानी की आवश्यकता थी जो की गई। यह उपहास निन्दनीय है जो किया जा रहा है। मैं कहता हूं कि आप इस बात को समझें कि इसमें क्या उपहास की बात है, जैसे

[पंडित भवानी प्रसाद तिवारी]

अभी हमारे एक भाई ने एक बैज बताया कि "आई० एम० ए० सी० आई० ए० एजेन्ट"। इस बात को, इस गम्भीर बात को बिकने के दबाव मे न आने से रोकने की ताकीद करेगे । उसका इस प्रकार उपहास यहा इसलिये होता है, सिर्फ इसलिए, कि शायद यहा कोई न कोई ऐसी एजेन्सी है और उस एजेन्सी के माध्यम से कोई न कोई काम कर रहा है । इस उपहास को छिपाना चाहते है ? इसलिए यह प्रयत्न चल रहे है । ऐसे गम्भीर प्रश्न पर सावधानी से विचार करने की बजाए उपहास और मजाक उडाया जा रहा है। मै यह स्पष्ट करना चाहता हू, ये सकेत इस बात के मौजूद है कि ख़रीद-फरोख्त जारी है और नैतिकता का अध पतन हो रहा है । यह स्पष्ट दीख रहा है, बल्कि इसकी जाच कराई जाए । अरे भाई, यह तो दीख रहा है, रोज दीख रहा है, अब इसकी जाच का क्या करिएगा—इस बात की क्या जाच करिएगा कि जहा घूस देने वाला दोनो और घूस लेने वाला दोनो राजी है ? क्या जाच करिएगा, कोई पकडा नही जाता ? ठीक, उसी तरह से क्षमा भाव से यह काम चलता चला जाता है, रहस्यात्मक स्थिति मे यह काम चलता है। सच-मुच मे, जैसा शास्त्री जी ने कहा, हम तो नही जानते कौन पैसा लेता है, क्या प्रमाण है क्या नही है ? यह जरुर है कि यू० एस० ए० के विद्वानो ने और पत्रकारो ने स्वय प्रमाण उपस्थित किया, वह बात और है—इसका कोई महत्व नही—मगर इसको हम क्यो नही जानते, इसलिए कि यह अधेरे मे चलता है..

श्री महावीर त्यागी : यह बात भी जरा विचारिये कि इसका कोई उपहास करने की बात नही है, वहा इस बात का तकाजा है कि हम जनता को मालूम नही करते, गवर्नमेट के पास एजेन्सी है, वह क्यो नही मालूम करके सजा देती उनको ? गवर्नमेट का फर्ज है, वह उसकी तहकीकात करके सजा दे उसके अपराध का ।

पंडित भवानी प्रसाद तिवारी : त्यागी जी, आपको धन्यवाद है, मै भी उसी मुद्दे की बात कह रहा हूं । जहां पर अधेरे मे काम चलता है, जो स्पष्ट दिखायी नहीं देता··· अब, जो ले रहा है पैसा वह बता दे गवर्नमेट को और आपको और कह दें सी० आई० ए० की तरफ से काम कर रहा है । नही, वह नही बताएगा...

श्री महावीर त्यागी : गवर्नमेट की सी० आई० डी० मालूम कर सकती है ।

पंडित भवानी प्रसाद तिवारी : मिनिस्टर बैठे है, वे गवर्नमेट का दृष्टिकोण बताएगे । क्या वह चाहते है जो सी० आई० ए० कर रही है वही हमारी सी० आई० डी० भी चारो तरफ करने लगे ? जरा सावधानी से सुनिये । मै यह अर्ज कर रहा था, इनने सूक्ष्म और रहस्यात्मक ढंग से वे काम चलते है कि यह कभी भी जाना नही जाता । अच्छे अच्छे लोगो को स्थिति मालूम नही होती और जनता तो खैर इसको नही जानती परन्तु ये राष्ट्र का कितना नुकसान कर सकते है यह स्थिति सबको समझ मे आती है और इसलिये यह मोटे तौर से कहा जाता है, जैसा कि विनोबा जी से किसी ने पूछा, कितना आम भ्रष्टाचार हिन्दुस्तान मे फैला हुआ है गाधी जी के मुल्क मे, इसका क्या कोई उपचार है ? तो उन्होने उत्तर दिया कि तालाब मे एक मछली अगर गंदी हो तो पकड कर निकाल दी जाए, जब तमाम का तमाम ऐसा है तो कैसे हो सकता है। आप सावधान रहें, जहा गरीबी की स्थिति जिस देश मे होती है वहा लोभ का लाभ उठाकर उसके लोगो को उसकी नैतिकता से गिराया जा सकता है, उनका अध पतन किया जा सकता है । लोभ की ऐसी ताकत है कि उसमे लोग बिक जाते है और जैसा मैने कहा, बिक रहे है । इससे सावधानी की स्थिति पैदा हुई है ।

तो इसलिए इस प्रस्ताव में, जैसा कि नवल किशोर जी कह रहे थे कि भाई, इसमे सी० आई० ए० वगैरह का नाम नही है, इसमे तो सब फारेन की बात कही गई है । जी नहीं, सब फौरेन की बात कहने से तो यह बात उलझती है । आप किसको कहिएगा ? कोई और यहा पर जासूसी

या खरीद-फरोख्त लोभ-लाभ का ज्यादा काम नहीं कर रहा है सिवाय यू० एस० ए० के। वहां के लोग आते जाते हैं। उन्हीं के पास इतना इफरात से फालतू पैसा है जिसका उपयोग करके यह काम करते हैं। यह प्रमाण भी है कि दुनिया के तमाम हिस्सों में उन्होंने ऐसा किया है। इसलिये मेरा कहना है, मैंने दोनों बातें कही, और इस प्रस्ताव में, जब सब स्पष्ट है, तो उसकी जांच क्या करियेगा और इसमें जब सब फारेनर्स इन्वाल्व नहीं हैं और साथ ही साथ विरोधी दल ने सिर्फ सी० आई० ए० लोगों ...

श्री नवल किशोर आपकी बात कुछ जमी नहीं।

पंडित भवानी प्रसाद तिवारी : भाई, जब चमड़ा पक्का होता है तो फिर उसमें जमती नहीं है कोई चीज ...

श्री प्रेम मनोहर : (उत्तर प्रदेश) : के० जी० बी० के बारे में बोलिए जो सब जगह गड़बड़ करता है।

पंडित भवानी प्रसाद तिवारी : आपकी भी चमड़ी मोटी है और हमारी भी है। मगर आप जो समझा रहे थे वह भी मेरी समझ में नहीं आया।

श्री नवल किशोर : आपकी बात जमी नहीं।

पंडित भवानी प्रसाद तिवारी : किस तरह से बात जम सकती है क्योंकि आप तो वहां पर बैठे हैं। अगर आप दिमाग खाली करके सुनें, तो जरूर जम जायेगी। अगर आप दिमाग की खिड़कियां बन्द कर देगें, तो फिर किस तरह से बात जमेगी।

तो मैं यह अर्ज कर रहा था कि ठीक वक्त पर जो सावधानी की गई उससे देश बच गया है और श्री श्याम लाल जी ने जो प्रस्ताव रखा है उसकी अब आवश्यकता नहीं है। इससे तो और उलझन पैदा हो जायेगी। वे चाहें तो गवर्नमेंट का दृष्टिकोण सुन लें। मिनिस्टर महोदय जो कहें उसके बाद मेरा निवेदन यह रहेगा कि जिस स्थिति में प्रधान मंत्री जी ने राष्ट्र को अध:पतन से बचाने की कोशिश की, यह प्रस्ताव उस स्थिति को उपहास की स्थिति में डाल देगा। अतः मेरा उनसे यह निवेदन है कि वे अपने प्रस्ताव को वापस ले लें।

श्री रणबीर सिंह (हरियाणा) : उप सभाध्यक्ष जी, यह जो प्रस्ताव है वह बहुत पेचीदा नहीं है, उसकी मन्शा जरूर पेचीदा है। यह बात बिल्कुल साफ है कि फारेन एजेन्टों का जिक्र करके वे सरकार के जिम्मे यह बात लगाना चाहते हैं। उनका जो प्रस्ताव है उसमें वे कहते हैं कि इस बारे में जांच करवाइये। वे कहते हैं कि तुम्हारी सी० आई० डी० क्या कर रही है। हमारे प्रधान मंत्री जी ने देश को बतलाया था कि इस देश के अन्दर सी० आई० ए० के एजेन्ट काम कर रहे हैं। उनकी इस बात का आज किस तरह से हमारे साथी और उनके सहयोगी उपहास कर रहे हैं, वह इस बात से साबित होता है कि इस सदन के चुने हुए लोग, लोगों द्वारा चुने हुए जो पार्टी के नेता हैं, वे आज सी० आई० ए० का बिल्ला लगाकर आते हैं कि हम सी० आई० ए० के एजेन्ट हैं।

श्रीमन्, जो यह प्रस्ताव लाया गया है उसमें कहा गया है कि एक जज द्वारा इस चीज की जांच कराई जानी चाहिये ; तो मैं उनसे कहना चाहता हूं कि पहले वे अपनी जांच करें, अपनी समझ से जांच करें। क्या उन्होंने अपनी आंखों से नहीं देखा है कि एक पार्टी का जो नेता है वह बिल्ला लगाकर आता है।

श्री नवल किशोर : आपने उनके ऊपर ऐक्शन क्यों नहीं लिया। (**अन्तर्बाधा**)

श्री रणबीर सिंह : घबराइये नहीं, वह सब कुछ हो जायेगा। सवाल साफ है कि प्रस्तावक महोदय की मन्शा क्या है? जैसा मैंने कहा कि प्रस्तावक महोदय की मन्शा पेचीदा है। प्रस्तावक को इस बात का डर है। (**अन्तर्बाधा**) आपकी भावना में

[श्री रणबीर सिंह]

कुछ गड़बड है । आपको इस बात का डर है कि कही जाते जाते हमारे ऊपर ही यह चीज न आ जाय और आप चौकसी में इस तरह की बात कह रहे है । (अन्तर्बाधा) साफा तो खीचकर लाने का काम करता है । साफा को फैंक कर उधर से लोगों को इधर खीच कर लाया जा सकता है क्योंकि पहले इधर बैठे थे और अब उधर बैठ गये हैं ।

श्री नवल किशोर : इस सदन मे यह बात बतलाई गई थी कि एक ट्रेन में एक सरदार जी को उन्ही के साफे से बांध दिया गया था ।

श्री रणबीर सिंह : देखा जायेगा । आप हमको बांधते हैं या हम आपको बांधते हैं । देश ने बतला दिया है कि हमने आपको बाध दिया है एक जगह पर ।

जैसा मैंने कहा कि यह प्रस्तावक महोदय की मन्शा के बारे में चित्र है, जो प्रस्ताव उन्होंने भेजा है ।

उनको परेशानी नही, है चिन्ता नही है । चिन्ता की बात होती तो वे कहते कि सरकार इसके बारे मे जांच करे । कहते हैं जज को बिठाओ जैसे यहां भी गोली चली हो । उनको हर जगह गोली चल गई दिखाई देती है । कही खराबी कराई और उसके बाद अगर जूता लग जाय तो कहते हैं जज को बिठाओ । पुलिस को लग जाय तो कोई बात नही कहेंगे, किसी दूसरे को लग जाये तो कहेंगे कि जज से जांच कराओ । इस प्रस्ताव में भी जूते के खतरे की वजह से जज का जिक्र है, जज से नीचे जांच नही हो सकती । सवाल साफ है । हमारा देश एक ऐसा देश है जिसमें सारे ख्यालात के लोगों को विधान के मुताबिक इजाजत है अपने विचार रखने की । यहां पर कुछ भाई है जो साम्यवादी है उसमें भी कुछ रूस के हिमायती है, कुछ भाई है जो चीन के हिमायती है और कुछ भाई है जो अमरीका के हिमायती है । इस देश मे कौन इस बात को नही जानता । सब जानते हैं । प्रश्न सिर्फ यह है कि जिस बात से खीझ कर ये यह प्रस्ताव लाये है वह क्यों की गई और क्या हालात थे । उपसभाध्यक्ष जी, आपको मालूम है कि आज से बहुत दिन पहले, तकरीबन एक साल पहले इस देश के ऊपर हमला हुआ और एक विदेश ने शक्ति दिखानी चाही, डराना चाहा और जब हम कह रहे थे कि दूसरे देश के भाईयों को भगा कर, हमारे देश मे भेजकर हमारे ऊपर आर्थिक दृष्टि से हमला हो रहा है उस वक्त पर कुछ देश थे, यहां पर जिक्र हो रहा था के० जी० बी० का, उनको परेशानी उस देश वालों की नहीं है, जो अपना सातवां बेडा यहां भेजना चाहते थे, जिन्होंने सातवां बेड़ा खडा करने का जाहिर किया दुनिया मे हमको डराने के लिये और हमारे खिलाफ लडने वालों को हौसला दिया ।

श्री मान सिंह वर्मा : उन्ही के खिलाफ तो इन्क्वायरी चाहते है ।

श्री रणबीर सिंह : आपका मन जानता है कि किसके खिलाफ चाहते हैं । बात साफ है, जनता इस बात को अच्छी तरह से समझती है कि ग्रान्ड एलाएन्स वाले भाई किधर बैठे है, सही बैठे है, गलत बैठे है । यह बात प्रधान मंत्री जी ने इनको बताने के लिये नही कही थी । इनको सारा ज्ञान है कि सी० आई० ए० कौन है । इनके ही एक नेता सी० आई० ए० के एजेन्ट का बिल्ला लगा कर सेन्ट्रल हाल मे आ सकते है फिर भी ये हमसे पूछते है, सरकार की मशीनरी मे पूछते है । इनको तो ज्ञान है कि सी० आई० ए० का सम्बन्ध किसके साथ है । इस बात की यहा बहुत ज्यादा जानकारी की आवश्यकता नही है । जनता को भी इस बात का ज्ञान है । सवाल सिर्फ यह है कि कुछ भाई है जिनकी हवा देश की राजनीति के साथ बदलती है, राजनीति के मुताबिक उनके विचारों मे तबदीली आती है ।

श्री बनारसी दास (उत्तर प्रदेश) : मै यह पूछना चाहता हू कि क्या माननीय सदस्य दावा करना चाहते हैं कि हमारे देश में सी० आई० ए० या दूसरी एजेन्सीज को स्वतंत्रता है कि वे पूरी तरह से यहां पर कार्य कर सकते हैं, रावबर्ट कर सकते है ?

श्री रणबीर सिंह बनारसी दास जी को फिक्र है । मैंने नही कहा, बनारसी दास अपनी जबान से मेरी भाषा बोलना चाहते हैं, वे बोल नही सकेंगे । इधर आ जाय तो शायद बोलने की इजाजत हो जाय, मैं भी मान लू । उधर से वे मेरी भाषा को अपनी जबान मे कहे तो मै उनको उस बात की आज्ञा नही दे सकता हू, न ही सलाह दे सकता हू ।

श्री नवल किशोर : साफा थोडा उतार ले ।

श्री रणबीर सिंह : साफा आपके ऊपर क्यो चढ गया है, यह बात मेरी समझ में नही आई ।

श्री नवल किशोर : जरा दिमाग की खिडकी खोलिये ।

श्री रणबीर सिंह : खिडकी आपकी खुलनी चाहिए, मेरी तो खुली हुई है, आपकी बन्द हो गई नजर आती है । एक प्रदेश मे राज्य करते थे, अब उधर कोने मे बैठे ह, मेरी खिडकी खोलने की बात करते है, अपनी खोलो, भूले-भटके फिरते हो, अपनी खिडकी खोलो । उपाध्यक्ष जी, असल बात वही है । प्रस्तावक महोदय इस बात की अहमियत को उडाने के लिए कि इस देश के अन्दर कुछ विदेशी भाई सी० आई० ए० के नाम से या दूसरे नाम से हमारे राष्ट के हितो के खिलाफ कार्यवाही करते है और उनके खिलाफ सरकार अपनी दृष्टि उनके ऊपर रखे, इस बात का उपहास करने के लिए जिस तरह से यह भाई प्रस्ताव लाये है उसी तरह से जब उनकी मर्जी के खिलाफ जब कोई बोलना चाहता है तो उसका भी वे उपहास उडाना चाहते है और साफे का उपहास भी इसलिए है । लेकिन मै बता दू कि देहात मे साफा बाधे या न बाधे, मै नवल किशोर जी को याद दिलाना चाहता हू सेंट्रल हाल की बात । हमारे यहा एक बात कही जाती है, 'अनपढ जाट पढे बराबर, और पढ जो खुदा बराबर' । तो हमारी खिडकी क्यो खोलना चाहते है, हम तो ग्रेजुएट है और पढे लिखे है । तो आप इस बात की फिक्र मे न रहिए कि आप को हमारी खिडकी खोलनी है । अगर वह अपनी खिडकी खोल सके तो मुझे खुशी होगी ।

श्री गनेशी लाल चौधरी (उत्तर प्रदेश) : वह खुदा के बराबर होकर बोल रहे हैं ।

श्री रणबीर सिंह . मै आप के लिए तो कुछ नही हू । आप के लिए हम हौवा है, खुदा नही है ।

श्री लोकनाथ मिश्र (उड़ीसा) . आप कोन सी यूनिवर्सिटी के ग्रेजुऐट है ?

श्री रणबीर सिंह : दिल्ली के । और अगर आप चाहे तो साल भी बता दू । जिस समय आप नाटक किया करते थे उस समय मै बहा नाटक करता था । अब आप ने शुरू किया है । उस काम मे मैं बहुत ज्यादा होशियार हू ।

श्री लोक नाथ मिश्र · मैं समझता था कि आप लुधियाना के है ।

श्री रणबीर सिंह तो इस प्रस्ताव के बारे में जैसा मैंने कहा, अगर इस का मशा दुरुस्त होता तो उनको परेशानी होती इस बात की कि कुछ विदेश के भाई हमारे राष्ट्रीय हितो के खिलाफ काम कर रहे है और उनके खिलाफ कडी कार्यवाही की जानी चाहिये और अगर वे इस तरह का कोई प्रस्ताव लाते तो बात कुछ समझ मे आती ।

श्री महावीर त्यागी : आप इसको अमेंड कर दीजिए ।

श्री रणबीर सिंह वह वक्त तो निकल गया । अब तो आप को ही इस का अधिकार है ।

श्री श्यामलाल गुप्त (बिहार) : प्रस्ताव क्या है ?

श्री रणबीर सिंह : क्यो सदन का वक्त ले रहे है ? क्या लाइन बता दू कि कहा अमेंड करना है ? उपसभाध्यक्ष जी, अगर उनको वास्तव में

[श्री रणबीर सिंह]

चिन्ता होती कि विदेश के भाई हमारे देश के हित के खिलाफ यहाँ काम कर रहे है और उनके खिलाफ कार्यवाही की जाय तो इस प्रस्ताव की भाषा ही अलग होती। लेकिन इस प्रस्ताव का वह उद्देश्य है ही नही। मै कहना नहीं चाहता, लेकिन इस प्रस्ताव से तो बदकिस्मती से ऐसा मालम होता है कि मुझ को तो कम पढ़ा लिखा कहा गया, लेकिन कहीं ऐसा तो नही है कि उनमे ही कही पानी मरता हो। इस बात का बहुत शक है, लेकिन किसी की मशा के बारे में कुछ कहना बुरा लगता है इसलिए मै उन शब्दो को वापस लेता हूं। लेकिन जैसा कि मै आपको कह रहा था कि प्रधान मंत्री महोदया ने यह चिन्ता व्यक्त की थी कि देश के अंदर सी० आई० ए० के कुछ भाई राष्ट्र के हितो के खिलाफ कार्यवाही कर रहे हैं और उस के लिए देश को होशियार रहना चाहिए। उन्होने एक बडी और थोडे शब्दो में एक चेतावनी दी थी कि इसलिए कि देश पर एक आपत्ति आ सकती है। हम ने उस आपत्ति का आह्वान नही किया, लेकिन हमारे देश पर आपत्ति आयी और हमारा एक पड़ोसी देश जो कभी, 25 साल पहले हमारा भाई था, उसने हमारे ऊपर आक्रमण किया। कुछ विदेशी लोगों ने, देशों ने उसको उकसाया और ऐसी हालत पैदा कर दी कि जिस से हमारे आर्थिक जीवन पर एक बड़ा भारी हमला हुआ। हमारी जमीन पर तो वे हमला नही कर सके, लेकिन हमारे आर्थिक जीवन पर हमला हुआ और उससे जो घाव हमको लगा हमारा वह घाव अभी भरा नही है। अनेकों मुश्किलात हमारे देश के सामने है। यह मंहगाई की कडी जिसकी वजह से बहुत सारे भाई दिल से परेशान हो सकते है यह उसी की एक कड़ी है। महंगाई इस देश के अन्दर अब जो आई, इसलिए नही आई कि हमारे देश के अन्दर पैदावार घटी हो, हमारे देश के अन्दर पैदावार बढ़ी है। लेकिन इसके बावजूद भी मंहगाई आई। महंगाई के सम्बन्ध में कहा कि विदेशों ने हमारे ऊपर हमला किया और बड़ी बड़ी ताकतों ने उनको उकसाया। इसलिए मंहगाई आई। मंहगाई की जो मुश्किलात है वह हमें एक दूसरे से समझकर, आपस में एक दूसरे का कष्ट बांट कर हम कष्ट का मुकाबिला कर सकते है। लेकिन यह कहना कि मामला दूसरा है, कौन मरता है, किसके कहने से मरता है, क्या करता है यह ठीक नही। लेकिन एक बात सही है कि 1962 की लडाई में देखा कि बहुत सारे भाई थे, लेकिन एक बडे जोर से प्रचार चलाता था कि इस देश के पास हथियार नही है, इसलिए फौजो को मरवा दिया। वह कार्यवाही भी दूसरे देश के एजेन्ट की हो सकती है जो एक गलत हवा पैदा करता था। आज भी हमारे देश में, ठीक है कि फौजी हमला नही है, लेकिन हमारे देश के आर्थिक ढांचे पर हमला है। आज हमारा देश एक तरक्की करने जा रहा है और हमको एक आशा दिखाई देती है कि हमारे देश के अन्दर पांचवी पांच साला योजना के लिए 51 हजार करोड़ रुपये खर्च करना चाहते हैं। एक जमाना था जब ये भाई हमसे पूछते थे कि--वर्मा जी और त्यागी जी हमारे साथी पूछते थे कि 1800 करोड़ रुपये की मंजूरी हुई थी और इनके नेता यह शिकायत करते थे ...

उपसभाध्यक्ष (श्री बी० बी० राजू) : आप दस मिनट से ज्यादा बोल चुके है, आपके दो मिनट तो ऐसे ही खर्च हो गये।

श्री रणबीर सिंह : ये मेरे खाते मे क्यो लिखते हैं। मै दो चार मिनिट में खत्म करता हूं।

तो उपसभाध्यक्ष महोदय, आपको भी ज्ञान है कि 1800 करोड़ रुपए की पहली पांच साला योजना बनी। मैं नाम नही लूंगा, स्वर्गवासी हो गये, इनके नेता थे। वह कहते थे कि इनको कोई पैसा देने वाला नही। इनका कोई हिमायती नही, इनका कोई साथी नही। त्यागी जी को मै याद दिलाऊंगा कि वह बड़े जोर से कहा करते थे कि ढाई तीन सौ करोड़ रुपया भी नही मिलेगा। अब कईयो को परेशानी है कि यह कर्जा कैसे बढ़ेगा। के० जी० बी० वाले इनके पीछे पड़े

हुए है। यह तो देश के नेताओं को, आम आदमियों को मालूम है कि रूस ने पिछले सालों में हमारी जितनी मदद की है, उतनी किसी दूसरे देश ने नही की है। अनाज और खाने की चीजें अमरीका से आती हैं, यह ठीक है, लेकिन देश को बनाने के लिए यत्र या मशीनरी नही आती। सिवाय रूस के कि जिससे कि देश अपने पैरों पर खड़ा हो सका। परेशानी के० जी० बी० की है और बात सी० आई० ए० की करते हैं। किसी के खिलाफ सी० आई० ए० के नाम से कह लो। वह बात तो इसलिए ही कही गयी है कि जो भाई है वह उनके बहकावे में आयें। कार्यवाही जब होगी तो उसके लिए उस वक्त आपको बाकायदा नोटिस मिलेगा, जांच बैठेगी, फिक्र न कीजिए। जितनी बातें आप चाहते है, वह शासन मे मौजूद हैं अगर कोई वक्त आयेगा। किसी के खिलाफ कार्यवाही नही हुई ? सी० बी० आई० के लोग थे उनके खिलाफ भी हुई थी और दूसरों के खिलाफ भी हुई थी। अंग्रेजों ने हमारे खिलाफ भी की थी, त्यागी जी के खिलाफ भी की थी। इसमे पूरी जांच होगी और फिर जज फैसला करेगा।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS AND IN THE DEPARTMENT OF PERSONNEL (SHRI RAM NIWAS MIRDHA): Sir, I have listened with great care the speeches made by honourable Members today and on the previous days when this Resolution was debated. I have also seen the proceedings and read the speeches of honourable Members whom I did not have the occasion to listen. What impresses one is the great diversity of approach that is apparent during this debate. The arduous research of our friend, Shri Harsh Deo Malaviya, was matched by the learned speech of Dr. Bhai Mahavir. The general common sense approach of Dr. Z. A. Ahmad was no less effective than the trenchant criticism of Shri Subramania Menon. The speech of Shri Ranbir Singh gave the most devastating reply to some of the arguments advanced during the course of the debate . . .

श्री नवल किशोर : श्रीमन्, मैं आपके जरिए मिर्धा साहब से दर्खास्त करूंगा कि वे कम से कम चौधरी साहब की कौपी तो न करें अपने जबाब में।

SHRI RAM NIWAS MIRDHA: Even in a debate so varied as this, there is something extremely salutary, deeply sustaining, from the stand point of the country as a whole. Behind all the polemics, arguments and counter-arguments, there is in evidence a remarkable concern —I can safely say— among one and all for the security and integrity of our country.

SHRI MAHAVIR TYAGI: I am glad that you have appreciated it.

SHRI RAM NIWAS MIRDHA: Debates such as this tend to strengthen the sense of determination and resolve of our country to preserve our national integrity and heritage. In the ultimate analysis this is the sheet anchor, the bulwark that daunts and deters any inroads on the interests and values of our nation which we all so greatly cherish. As the House is aware, this subject had come in the form of a Starred Question on 16th November. We assured the House that the Government were aware of the reports and statements that foreign intelligence agencies are active in different parts of the country and that we are maintaining a continuous watch over such activities. We had also made it known that such activities are not conducive to the promotion of mutual good relations. At the same time we had urged that the disclosure of information which the Government has in its possession or the details of what is done to counter the activities of foreign intelligence organisations will not serve any public interest in matter of security one must tread surely but softly. In pursuing one's larger objective one should not say or do anything which may, in the end, prove to be self-defeating. This is my appeal to the honourable Members who have been so persistent on occasions that we must disclose what we are doing, whether we have warned the organisations concerned regarding the danger of these intelligence agencies and so many things that were mentioned in this House. We will be living in a world of self-delusion if we do not realise that intelligence work has become a part of international life. Every country has its own intelligence network. In the nature of things one cannot perhaps object to or prevent some collection of intelligence, but irrespective of international or diplomatic practices, we cannot connive at subversion masquerading as intelligence. No country can tolerate interference by any agency in the internal affairs of the country. We have our values, our Constitution, and our way of life and at no cost shall we permit any foreign organisations to erode them. We are an open society and we are proud of it. We know India cannot isolate itself from the rest of the world. We have friendly relations and cultural exchanges with a large number of

[Shri Ram Niwas Mirdha]
countries of varying ideological hues. While promoting genuine cultural inter-flow, we should be on guard that no one takes undue advantage of the openness of our society and interferes under some guise in our internal affairs.

Speaking only of the recent past, the House will recall that when the country stood united in the face of the challenges arising out of the freedom struggle of Bangla Desh, no one, particularly no foreign influence, could weaken the country's resolve. After the liberation of Bangla Desh and in the months that followed, we have reasons to believe that the foreign agencies have become more active. The Prime Minister struck a note of waring. In different forums such as meetings of political parties, newspapers and journals published from different parts of the country, the subject came up for discussion and the need for vigilance was fully endorsed. I have referred to these because such a reaction is salutary and bears testimony to the fact that we are watchful.

Sir, Dr. Bhai Mahavir, in his speech, laboured hard to compare Government to the chowkidar who shouts 'Jagte raho'. I do not really understand Shri Mahavir's objection to a vigilant citizenery. Does he wish to have a chowkidar who sings lullabies in the fond hope that the nocturnal miscreants will also go to sleep? I am afraid his illusions are his own—we cannot afford to share them.

Sir, we have also shared with this House our concern regarding the role of foreign money. The Intelligence Bureau had been given the delicate task to inquire into this matter following the demand made by all sections of this House that a thorough probe should be made into the allegations that foreign money was being used in the country to influence our political, social and economic institutions. We had made known to the House the sever limitations under which an intelligence organisation has to function. It cannot make open enquiries or record evidence. It has to rely on the secret sources of information which cannot be made public. But with these limitations, it was not possible to make such reports public. At the same time, the general issues thrown up as a result of the enquiry were fully shared with the House. It was pointed out that while any precise quantitative assessment of the financial assistance received was not possible, the indications were that it was selective and was not so small as to be ignored. It was also mentioned that it had been possible for foreign intelligence agencies to finance the activities of certain institutions and organisations working in academic and research fields. Such institutions and organisations themselves might not have known the ultimate source from which assistance was being extended to them or even that the scholarships or travel grants or other forms of monetary assistance they had received to carry on their academic or research work had been obtained from any foreign intelligence agency. The House is aware that we had the Asia Foundation wind up its activities in the country. The House is also aware that Government set up a Council of Social Sciences Research with a suitable grant to review the progress of social science research and to sponsor research programmes in this field. The setting up of the Council, while considered necessary and desirable in itself, would also have the effect of reducing the dependence of Indian research institutions and scholars on foreign financial assistance for their worth while projects in this field. We had also touched on the problem of indirect financial assistance by foreign agencies to individuals and organisations of various descriptions in India. This takes many forms such as large commissions on sales of literature imported from abroad, subventions paid out of trade earnings by bilateral understanding between commercial enterprises and recipient organisations, high advertisement charges, translation fees, etc. Apart from creating special cells in the Intelligence Bureau and in the Directorate of Enforcement for undertaking a closer scrutiny of remittances, conversion, etc., efforts are also being made to enforce rigorously the existing provisions of law to curb malpractices. The House is also aware that the Finance Minister has already introduced the Foreign Exchange Regulation (Amendment) Bill, 1972, which is presently under the consideration of the Joint Select Committee. Sir, some reference was made to the questionable activities of foreign scholars in India. As I have stated earlier, we are an open society and we fully welcome genuine scholars and academicians. A country as rich in its variety and diversity as India will naturally fascinate academic scholars. At the same time, we should be careful that nothing adverse to the interests of the country is allowed to be carried on in the garb of academic pursuits. It is with this aim in view that we are formulating guidelines for research by foreign scholars in India. While we will be happy to assist genuine foreign scholars to undertake researches on topics which create better understanding about India among their own countrymen, it would also be necessary to exclude from the purview of such studies problems relating to sensitive themes and areas, defence and security matters, etc.

We have also informed the House that we are undertaking the drafting of a legislation to impose suitable restrictions on the receipt of foreign contributions by individuals and institutions in this country . . .

SHRI MAHAVIR TYAGI Very good

SHRI RAM NIWAS MIRDHA· with a view to ensuring that our parliamentary institutions, political organisations, academic and other voluntary organisations working in important areas of national life are able to function in a manner consistent with the values of a sovereign democratic republic This would naturally be a somewhat complicated legislation, encompassing as it does several walks of life We also have to exercise care to ensure that while the legislation fulfils its dominant objective, no undue harassment is caused to those pursuing their legitimate and *bona fide* avocations We hope to be able to introduce this legislation very shortly

Well, Sir, it was stated that we have not been very active in bringing in a legislation of this nature before the Parliament Well Sir I would like to go into the history of this proposed legislation to say that the fault does not lie only on our side The then Home Minister Chavanji made a statement in Parliament in May 1960 indicating the broad conclusions reached by the Government after a careful study of the whole matter In pursuance of this, legislative proposals are being finalised for the purpose of imposing suitable restrictions on receipt of funds from foreign organisations, agencies or individuals otherwise than in the course of ordinary and *bona fide* transactions

Sir, it was decided by the Government that before a legislation of this nature is finalised, the principles underlying this legislation should be discussed with the leaders of the Opposition parties in Parliament Copies of notes were circulated to the leaders of Opposition parties or groups in Parliament for ascertaining their views Replies were received only from M P s belonging to the Swatantra, CPI(M) and Congress (O) parties Two suggestions were made by them One was that the Government should make public or disclose to the Members the secret report of the Intelligence Bureau The other suggestion was that the scope of the legislation should be enlarged

As regards the first suggestion it was obvious that the Government could not make public the secret report The obvious limitations under which Intelligence organisations should function did not permit us to do that To that extent that was not a reasonable demand

Well Sir, another suggestion that was made was that the scope of the Bill should be enlarged But no concrete suggestions were sent as to in what manner the scope of the Bill should be enlarged From all these points of view I am sorry to say, Sir, we have not been very much assisted by the Opposition parties or Members of Parliament Even now, Sir, I would tell the honourable Members that if they have any suggestions by which we can make this proposed legislation more effective and more inconsonance with the principles and ideas that underlie it the Government would welcome them and try to incorporate as much of them as possible in the proposed legislation that we wish to introduce very shortly

Well Sir, here again I would not go into our line of thinking But there are various types of restrictions that are sought to be put in the proposed legislation to control the inflow of foreign money I would not go in detail into this But I would say that we will welcome any suggestion in this respect

Sir in the end, I would only say that it is very necessary that we as a democratic country are vigilant and the Government is very vigilant and is doing every thing in its power to see that our democratic way of functioning remains intact that no undue restrictions are placed, that our national security is ensured and from these points of view there is no need for any sort of inquiry as suggested in this resolution

Sir, in the end, I would request the honourable Member who has moved this resolution to kindly withdraw it

Thank you, Sir.

THE VICE CHAIRMAN (SHRI V B RAJU) The House stands adjourned till 11 00 A M on Monday, the 18th December, 1972

The House then adjourned at five of the clock till eleven of the clock on Monday the 18th December, 1972.

L/P(D)16RSS—570—8-3-1973—GIPS